हिंदी पाठ्यपुस्तक-7

1. इतने ऊँचे उठो

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. कविता में जाति-धर्म, ऊँच-नीच तथा काले-गोरे के भेदभाव को दूर करने की बात कही गई है।
2. दुनिया को एक दृष्टि से देखने से समाज में समानता आती है और उन्नति होती है।
3. संसार में मलय पवन के समान शीतलता अपेक्षित है।
4. सूरज, चाँद, चाँदनी, तारे हमारे साथ प्रतिपल हैं।

- **लिखित**

1. कविता में मोह के बंधन तोड़ने की बात कही गई है।
2. 'युग की नई मूर्ति रचना' से कविता का तात्पर्य समाज में नव निर्माण से है।
3. ऐसा इसलिए कहा गया है ताकि हम सभी भेदभाव भुलाकर हर उपेक्षित वस्तु को सकारात्मक तथा उपयोगी बना सकें।
4. कवि अतीत से उतना ही लेने की बात कह रहा है जितना उसके लिए पर्याप्त है।
5. सकारात्मक सोच और रचनात्मक कार्यों पर ध्यान देकर आदतों में सुधार करके वर्तमान को सँवारा जा सकता है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. पद्यांश में आकाश जितना ऊँचा उठने के लिए कहा है।
2. दुनिया को एक दृष्टि से देखने से आशय समाज में समानता का भाव लाने से है।
3. संसार को जाति भेद, धर्म-वेश, काले-गोरे और द्वेष की ज्वालाओं से जलता बताया है।
4. धरा को करुणा और समता की भाव-दृष्टि से सिंचित करने के लिए कहा गया है।

- **अपनी समझ से**

1. (ग)
2. (क)
3. (घ)
4. (ग)
5. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. संसार में भेदभाव दूर हो जाने पर जीवन सुखमय, प्रेमपूर्ण और समतामूलक हो जाएगा। लोग एक-दूसरे को मानवता के भाव से देखेंगे तथा आपस में सहयोग की भावना बढ़ेगी।
2. अपनी नई सोच और सकारात्मक विचारों से समाज में कुछ नया करना ही मौलिकता एवं सृजन है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का आशय है कि पुराने और निरर्थक विचारों से बँधे रहना मूर्खता और पतन का संकेत है।
2. इस पंक्ति का आशय है कि नए विचारों, नए जोश और कर्मशीलता से वर्तमान को उपयोगी बनाया जाये ताकि भविष्य को सँवारा जा सके।
3. इस पंक्ति का आशय है कि गतिशीलता ही जीवन का शाश्वत सत्य है। जहाँ गति है वहीं जीवन है और ठहराव पतन का कारण है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. <u>लो अतीत से उतना ही</u> जितना पोषक है
जीर्ण-शीर्ण का मोह <u>मृत्यु का ही द्योतक है</u>
<u>तोड़ो बंधन</u>, रुके न चिंतन
2. चाह रहे हम इस धरती को स्वर्ग बनाना
<u>अगर कहीं हो स्वर्ग</u>, उसे धरती पर लाना
<u>सूरज, चाँद, चाँदनी, तारे</u>, सब हैं प्रतिपल साथ हमारे
दो कुरूप को रूप सलोना,
<u>इतने सुंदर बनो कि जितना आकर्षण </u>है।

- **सुमेलन**

1. (ग), 2. (ङ), 3. (घ), 4. (क), 5. (ख)।

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✗), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

1. मैं समाज में भेदभाव रहित समानता और मानवीय मूल्यों पर आधारित परिवर्तन लाना चाहूँगा।

   समाज में भेदभाव समाप्त करना आवश्यक है, क्योंकि इससे एकता और भाईचारा बढ़ेगा। साथ ही समाज में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा मिलेगा और समाज उन्नतशील बनेगा।

2. **पक्ष में तर्क**

   - सभी मनुष्य समान हैं।
   - समान दृष्टि से देखने से भेदभाव समाप्त होता है।
   - समाज में प्रेम, सहयोग, और शांति बढ़ती है।

   विपक्ष में तर्क

   - हर व्यक्ति की स्थितियाँ अलग होती हैं।
   - जरूरतमंद लोगों को विशेष सहायता देना आवश्यक है।

   अतः समाज में सभी को समान भाव से देखना चाहिए किंतु आवश्यकतानुसार व्यवहार में लचीलापन आवश्यक है।

- **भाषा आधारित**

1. (क) ऊँचा – नीचा
   (ख) समता – विषमता
   (ग) धरा – आकाश
   (घ) काला - गोरा
   (ङ) नूतन – पुरातन
   (च) शीतल – उष्ण
   (छ) कुरूप – सुंदर
   (ज) आकर्षण – विकर्षण
   (झ) गतिशील – स्थिर
2. (क) गगन – आकाश, नभ
   (ख) दुनिया – संसार, जग
   (ग) धरा – पृथ्वी, धरती
   (घ) पवन – वायु, हवा
   (ङ) सूरज – सूर्य, रवि
   (च) चाँद – चंद, शशि
3. जातिवाचक संज्ञा शब्द – भाषा, धर्म, देश

   भाववाचक संज्ञा शब्द – द्वेष, मोह, दृष्टि, मौलिकता
4. नर हाथ से वर्तमान का रूप सँवारो

   नई तूलिका से चित्रों के रंग उभारो

   नए राग को नूतन स्वर दो

   भाषा को नूतन अक्षर दो

- **कल्पना आधारित**

1. कविता पढ़कर मेरे मन में भी ऊँचे उठने और श्रेष्ठ बनने की इच्छा हुई है। मैं ऊँचे उठने के लिए परिश्रम, ईमानदारी और आत्मविश्वास के साथ कार्य करूँगा। इसके लिए मैं नकारात्मक विचारों को त्यागकर सकारात्मकता को अपनाऊँगा।
2. मैं वर्तमान समय में जाति-भेद, लिंग-भेद, अंधविश्वास और ऊँच-नीच जैसी रूढ़िवादी परंपराओं को हटाना चाहूँगा। ये परंपराएँ समाज में प्रगति में बाधक होती हैं।

   इन्हें हटाने के लिए शिक्षा, जागरूकता और नई सोच को बढ़ावा देना होगा।

- **क्रियाकलाप आधारित**

2. अतीत हमारे लिए अनुभवों का भंडार है। हमें इसकी गलतियों को दोहराने की बजाए उससे अच्छी बातें ग्रहण करनी चाहिए।

   हमारे पूर्वजों ने हमें परिश्रम और नैतिक मूल्यों की भी शिक्षा दी है। यदि हम अतीत की अच्छी परंपराओं को अपनाकर वर्तमान में लागू करें तो हमारा भविष्य उज्जवल बन सकता है।

2. घर से भी निकला करो

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. दो-तीन बार।
2. पहाड़ों पर जाने का।
3. अंकित और उसके मम्मी-पापा।
4. क्रिसमस की छुट्टियों में (24 दिसंबर को)।
5. ऊनी कपड़े, हस्तशिल्प तथा स्थानीय चीजें।

- **लिखित**

1. उनका पहला दिन होटल और उसकी बालकनी में बीता।
2. दूसरे दिन उन्होंने मालरोड तथा हिडिंबा मंदिर घूमे।
3. बर्फ गिरने से पहले बारिश हुई, हवा बंद हो गई, मौसम गुम-सा हो रहा था। मौसम खुलने के आसार दिख रहे थे।
4. बर्फ पर खेलने से पहले अंकित और उसकी मम्मी-पापा ने खूब सारे कपड़े पहने, मोजे पहने, दस्ताने पहने, ऊनी टोपियाँ पहनीं।
5. अंकित दस्ताने उतारकर बर्फ के गोले बना-बना कर मम्मी-पापा पर बरसाने लगा। कुछ देर बाद मम्मी-पापा भी शामिल होकर एक-दूसरे पर बर्फ के गोले दागने लगे। इस प्रकार उन्होंने बर्फबारी का आनंद लिया।

- **अपनी समझ से**

1. (क) 4. (घ)
2. (ख) 5. (ग)
3. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. अंकित के मम्मी-पापा सर्दी से डरते थे। वे लोग कड़ाके की ठंड में कहीं नहीं जाते थे। उन्हें घर के अंदर ही बंद रहना अच्छा लगता था। इसीलिए जब अंकित के पिताजी ने पहाड़ों पर जाने का कार्यक्रम बनाया तो सुनने वालों ने आश्चर्य किया। यहाँ तक कि अंकित ने भी अनहोनी कहा। इसीलिए मेरे विचार से उनकी इस प्रकार सोच परिवर्तित होना अनहोनी की बात थी।
2. जब मम्मी और पापा ऋतुओं के मजेदार होने वाले अनुभव के बारे में बातें कर रहे होंगे और उन्हें यह एहसास हुआ होगा कि वास्तव में ऋतुओं का अपना अलग ही आनंद है, तब उनकी बातें सुनकर अंकित ने कहा होगा कि ऋतुएँ घर के अंदर नहीं आतीं, इसलिए घर से थोड़ा निकला भी करो।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि उसे पहली बार ऋतुओं का वास्तविक अनुभव हुआ है। वह ऋतु परिवर्तन के आनंद को आज समझ पाया है। उसे ऋतुएँ रोचक लगने लगी हैं।
2. इस पंक्ति में बालक (अंकित) आश्चर्य कर रहा है कि मम्मी-पापा ने अचानक कैसे पहाड़ों पर जाने की योजना बना ली। उसके मन की जिज्ञासा कहीं हल्का संदेह प्रकट करती है।
3. आस-पास के लोगों की प्रतिक्रियाओं ने मम्मी-पापा के हौंसले को काफी हद तक तोड़ दिया था। लोगों ने अपने अनुभवों और आशंकाओं से अंकित के मम्मी-पापा के मन में नकारात्मक भाव भर दिए थे।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. ढेर 4. कॉफी
2. अनहोनी ही 5. छुट्टियों
3. नसीहत

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

1. यदि मुझे कहीं घूमने जाने का मौका मिला तो मैं पहाड़ों पर जाना पसंद करूँगा। वहाँ

ऊँचे-ऊँचे पहाड़, बर्फ से ढकी चोटियाँ, हरे-भरे जंगल और बहती नदियाँ देखूँगा। मैं ठंडी हवा का आनंद लूँगा और प्राकृतिक सुंदरता को निहारूँगा।

2. बाहर घूमने जाने पर कभी-कभी परेशानियों तथा रहने-खाने की असुविधाओं को झेलना पड़ता है। इसके बावजूद भी बाहर घूमने जाना चाहिए, क्योंकि इससे हमारा ज्ञान बढ़ता है, मन प्रसन्न रहता है और नए-नए अनुभव प्राप्त होते हैं।

- **भाषा आधारित**

1. पाठ में आए विदेशज शब्द हैं– नसीहत, वक्त, लोवर, रज़ाई, एकदम, क्रिसमस, नवंबर, दिसंबर, विंटर, प्री-विंटर, क्राइस्ट चर्च, होटल, अंदाजा, इलाके, मोबाइल फोन, कॉफी, रफ्तार, मजेदार आदि।
2. पाठ में आए मुहावरे और उनके वाक्य प्रयोग–
   - **हाथ बँटाना –** सहायता करना।
     वाक्य प्रयोग – हमें अपने माता-पिता के कामों में हाथ बँटाना चाहिए।
   - **गपशप करना –** व्यर्थ की बातचीत करना।
     वाक्य प्रयोग – राहुल साथियों के साथ बैठकर गपशप करता रहता है।
   - **हौंसला पस्त होना –** हिम्मत हार जाना।
     वाक्य प्रयोग – अनु पहाड़ की चोटी पर चढ़ना चाहती थी, लेकिन उसके साथियों ने उसका हौसला पस्त कर दिया।
   - **झुरझुरी होना –** भय लगना।
     वाक्य प्रयोग – कड़ाके की ठंड देखकर रामू को झुरझुरी होने लगी।
   - **मन मचलना –** आतुर होना।
     वाक्य प्रयोग – खिलौने देखकर बच्चे का मन मचलने लगा।
   - **ठहाका लगाना –** जोर से हँसना।
     वाक्य प्रयोग – गौरव की मजाकिया बातें सुनकर सब लोग ठहाका लगाने लगे।
3. (क) तेज हवाएँ <u>चल रही थीं</u>।
   (ख) सचमुच, बर्फ <u>गिर रही थी</u>।
   (ग) अंकित दस्ताने उतारकर बर्फ के गोले <u>बनाने लगा</u>।
   (घ) हिमपात की रफ्तार <u>बढ़ने लगी</u>।
   (ङ) मम्मी-पापा <u>भागकर</u> बालकनी में <u>आए</u>।
4. (क) ने (ग) और
   (ख) इसलिए (घ) किन्तु
5. (क) बर्फ के ढेरों को रौंदते हुए आगे बढ़े रहे हैं।
   (ख) यहाँ का तापमान शून्य से नीचे हो चुका था।
   (ग) मनाली में बहुत भीड़-भाड़ होगी।
   (घ) पिताजी शतरंज में मस्त हैं।
   (ङ) पहाड़ों की अनोखी दुनिया की सैर का मजा ही अनोखा था।

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. पिछले साल गर्मियों की छुट्टियों में मैं शिमला घूमने गया। वहाँ की ठंडी हवा बहुत अच्छी लग रही थी। चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और बर्फ की चोटियाँ थीं। हमने रोहतांग पास और सोलंग वैली देखी। बर्फ में खेलना और फिसलना बड़ा मजेदार था। स्थानीय भोजन बड़ा मजेदार और स्वादिष्ट था। मेरी यह यात्रा बहुत यादगारपूर्ण रही। मेरा मन बार-बार वहाँ घूमने को करता है।
2. पहाड़ों के घूमने के स्थानों की सूची–
   (i) मनाली, (ii) शिमला, (iii) मसूरी, (iv) नैनीताल, (v) दार्जिलिंग, (vi) श्रीनगर, (vii) औली तथा (viii) माउंट आबू।
3. परियोजना कार्य : घूमने का स्थान
   स्थान का नाम – शिमला
   क्या देखना चाहिए – प्राकृतिक सौंदर्य और ठंडा मौसम।
   विशेषताएँ – बर्फीली पहाड़ियाँ, सेब के बाग, साहसिक खेल, शांत वातावरण।
4. चित्र वर्णन
   यहाँ चाय के बागानों और बर्फीली पहाड़ियों के चित्र को दर्शाया गया है। यहाँ का वातावरण बड़ा ही रमणीय दिखाया गया है। चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ दिखाए गए हैं जिन पर बर्फ जमी हुई है। लोग नौकायन द्वारा फूल तोड़ रहे हैं।

बायाँ चित्र : बाऐं चित्र में दो महिलाएँ चाय के बागान में काम कर रही हैं। वे पारंपरिक टोकरियाँ पीठ पर लादे हुए हैं, चाय की पत्तियाँ तोड़ रही हैं। यह दृश्य चाय की खेती और मेहनत को दर्शाता है।

दायाँ चित्र – इस चित्र में दो व्यक्ति दिखाए गए हैं। एक व्यक्ति एक छोटी नाव पर बैठा नौकायन का आनंद ले रहा है। एक महिला फूल चुन रही है। दृश्य शांत जल और प्राकृतिक सुंदरता को दर्शाता है। यह किसी झील और पहाड़ी क्षेत्र का चित्र है।

3. क्या निराश हुआ जाए

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. समाचार-पत्र ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचारों से भरे रहते हैं।
2. सच्चाई भीरू और बेबस लोगों के हिस्से में पड़ी है।
3. कोटि-कोटि दरिद्रजनों की स्थिति को उन्नत और सुदृढ़ करने के लिए कायदे और कानून बनाए गए हैं।
4. टिकट बाबू ने लेखक के बाकी रह गए नब्बे रुपये उन्हें डिब्बे में ढूँढ़कर बड़ी विनम्रता के साथ आकर वापस किए।
5. पाठ में जिन महापुरुषों के नाम आए हैं, वे हैं– मदनमोहन मालवीय, तिलक जी, गाँधी जी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

- **लिखित**

1. जीवन के महान मूल्यों के प्रति लोगों की आस्था इसीलिए हिलने लगी है क्योंकि वर्तमान में ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है।
2. दोषों का पर्दाफाश करना तब बुरा रूप बन जाता है, जब गलत पक्ष को उद्घाटित करके रस लिया जाता है।
3. टिकट लेते समय लेखक ने टिकट बाबू को दस रुपये की बजाय सौ रुपये दे दिए।
4. एक बार लेखक अपने परिवार के साथ एक बस में यात्रा कर रहा होता है। बस अपने गन्तव्य से पहले निर्जन स्थान पर खराब हो जाती है। कंडक्टर दूसरी बस लाने चला जाता है। यात्रियों को लगता है, उन्हें ठगा गया है और वे ड्राइवर को बंधक बनाकर मारने को आमादा हो जाते हैं तभी.... कंडक्टर दूसरी बस लेकर आ जाता है। इस बात ने लेखक के विश्वास को और मजबूत कर दिया।
5. लेखक के अनुसार, बुराई इसमें है जब किसी व्यक्ति के आचरण के गलत पक्ष को उजागर कर उसमें रस लिया जाता है। जिस प्रकार बुराई में रस लिया जाता है। उसी प्रकार अच्छाई के पक्ष को उजागर कर उसमें उतना ही रस न लेना और भी बुरी बात है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. लेखक के अनुरूप जीवन तब नश्वर हो जाएगा, जब लोगों का लोगों से विश्वास उठ जाएगा। जब लोग केवल उन्हीं बातों का हिसाब लेकर चलेंगे जिन पर धोखा मिला है।
2. ऐसी घटनाएँ भी कम नहीं हैं, जब लोगों ने अकारण ही दूसरों की सहायता की हो, निराश मन को ढाँढ़स दिया हो और हिम्मत बँधाई हो।
3. रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रार्थना की है कि यदि मुझे संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े, तब भी प्रभु मुझे ऐसी शक्ति देना कि मैं तुममें संदेह न करूँ।
4. लेखक के अनुसार ऐसी घटनाएँ कम नहीं हैं, जब लोगों ने दूसरों की मदद न की हो।

- **अपनी समझ से**

1. (ख) 2. (घ)

3. (घ) 5. (घ)
4. (घ)

- **सोच-समझकर**

1. देश में कायदे और कानून इसलिए बनाए गए हैं ताकि सामाजिक व्यवस्था बनी रहे, अन्याय पर रोक लगे और सबको न्याय मिल सके। देश के दरिद्रजनों की अवस्था को सुधारा जा सके। देश की आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सके।
2. प्रस्तुत पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि लोगों को सकारात्मक पक्ष को अपनाना चाहिए। यदि केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखोगे जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. लोग सिद्धांत रूप में ईमानदारी मानते हैं, लेकिन निजी स्वार्थ और सुख-सुविधा के कारण उन पर चलना मुश्किल होता है। कभी-कभी परिवार, पद या सामाजिक दबाव के कारण व्यक्ति अपने आदर्शों से भटक जाता है।
2. भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है, जहाँ धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता। हालाँकि, आज कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है, जिससे लोग कानून की खामियों का फायदा उठा रहे हैं। इसके बावजूद, सच्चाई और ईमानदारी पूरी तरह नष्ट नहीं हुई है।
3. "दूसरों के दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है, लेकिन बुराई में रस लेना बुरी बात है।" का अर्थ है कि दोष उजागर करना सुध ार के लिए सही है, पर उसे स्वार्थ के लिए उछालना गलत है। यह समाज में नकारात्म. कता फैलाता है और इंसान की अच्छाइयों को अनदेखा कर उसे नीचा दिखाता है।

- **सही-गलत**

1. (✕), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✕)।

- **क्रम-संयोजन**

1. (8), 2. (3), 3. (6), 4. (1), 5. (7), 6. (4), 7. (2), 8. (5)

- **पाठ से आगे**

1. एक बार सड़क पर मेरा किसी व्यक्ति को भरा हुआ पर्स मिला, जिसमें पैसे और जरूरी कागज थे। आसपास पूछताछ करने पर उस व्यक्ति को मेरा पता चल गया। पर्स लौटाने पर मैंने उस व्यक्ति को धन्यवाद के साथ कुछ इनाम देना चाहा, पर पर्स लौटाने वाले व्यक्ति ने ऐसा करने के लिए मना कर दिया। यह घटना देखकर मुझे विश्वास हुआ कि अभी ईमानदारी बाकी है।
2. मेरे सपनों का भारत ऐसा होना चाहिए जहाँ ईमानदारी, परिश्रम और सच्चाई को न्याय व सम्मान मिल सके। सभी नागरिकों को समान अवसर प्राप्त हों, कोई गरीब व भूखा न रहे, सभी को शिक्षा एवं रोजगार मिले। कानून सबके लिए समान हो और उसका पालन निष्पक्ष रूप से हो। ऐसा भारत ही सच्चे अर्थों में विकसित और आदर्श राष्ट्र होगा।

- **भाषा आधारित**

1. (क) किसका रोजगार चलाने वाले फल-फूल रहे हैं?
   (ख) दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए क्या बनाए गए हैं?
   (ग) लोग किससे लाभ उठाने में संकोच नहीं करते?
   (घ) बच्चे किसके लिए व्याकुल थे?
   (ङ) किसकी आवश्यकता नहीं है?
2. (क) आरोप और प्रत्यारोप
   (ख) धर्म से भय खाने वाला
   (ग) दरिद्र हैं जो जन
   (घ) मारना तथा पीटना
3. (क) धर्मभीरु (ख) आरोप-प्रत्यारोप
   (ग) टिकट बाबू (घ) कंडक्टर
4. (क) प्रति+आरोप (ख) सदा+एव
   (ग) रवि+इन्द्र (घ) वि+आकुल
5. (क) ईमान + दार = ईमानदार
   (ख) मूर्ख + ता = मूर्खता
   (ग) सच्चा + ई = सच्चाई
   (घ) आवश्यक + ता = आवश्यकता
6. (क) **श्रमजीवी** – श्रमपूर्वक जीवन जीने वाला।

वाक्य प्रयोग – श्रमजीवी परिश्रम करके समाज का निर्माण करते हैं।

(ख) **क्षोभ** – असंतोष

वाक्य प्रयोग – अन्याय देखकर मेरे मन में क्षोभ उत्पन्न हुआ।

(ग) **अवांछित** – अनैतिक

वाक्य प्रयोग – परीक्षा में नकल करना अवांछित कार्य है।

(घ) **कोटि** – करोड़

वाक्य प्रयोग – महात्मा लोग धर्म निर्माण हेतु कोटि-कोटि प्रयास करते हैं।

(ङ) **निर्जन** – जन रहित

वाक्य प्रयोग – रात में निर्जन सड़कें डरावनी लगती हैं।

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. ईमानदारी का फल (कहानी)

   एक बार की बात है, एक गाँव में हरि नाम का एक किसान रहता था। एक दिन उसे खेत जाते समय राह में सोने की थैली मिली। वह चाहता तो उसे अपने पास भी रख सकता था, लेकिन उसने ईमानदारी दिखाते हुए वह थैली गाँव के मुखिया को सौंप दी।

   कुछ दिनों बाद थैली का असली मालिक मिला। मुखिया ने वह थैली उस मालिक को सौंप दी। मालिक हरि की ईमानदारी से बहुत प्रभावित हुआ। उसने हरि को पुरस्कारस्वरूप धन दिया। हरि की ईमानदारी के कारण उसका जीवन बदल गया।

   सीख– ईमानदारी का फल मीठा होता है।

2. **दोषों का पर्दाफाश करने वाले समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता**

   दोषों का पर्दाफाश करने वाले कार्यक्रम व समाचार समाज में जागरूकता फैलाते हैं। वे भ्रष्टाचार, अन्याय और अनैतिक कार्यों को उजागर करते हैं। इससे दोषी लोगों में भय उत्पन्न होता है तथा समाज सुधार की दिशा में आगे बढ़ता है। अत: ऐसे कार्यक्रम समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।

3. छात्र स्वयं करें।

4. **हरिशंकर परसाई और हजारी लाल द्विवेदी की बस यात्रा**

   परसाई जी – अरे, द्विवेदी जी आपकी बस यात्रा कैसी रही।

   विवेदी जी – यात्रा कम, परीक्षा अधिक थी। लोग अच्छाई को भी बुराई के चश्मे से देखते हैं। मुझे विश्वास हो गया कि अभी ईमानदारी जीवित है।

   परसाई जी – बिल्कुल सही कहा। किन्तु, बस में चढ़ते ही धक्का-मुक्की के दर्शन होते हैं।

   द्विवेदी जी – सच कहा। बस यात्रा समाज का आईना है।

   परसाई जी – और सही अव्यवस्था मेरे व्यंग्य का विषय बन जाती है।

   द्विवेदी जी – आपकी लेखनी समाज को सोचने पर मजबूर कर देती है।

   परसाई जी – धन्यवाद! साहित्य का यही उद्देश्य है।

4. फूल और काँटे

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. फूल और काँटे।
2. दूसरों को कष्ट पहुँचाना काँटे का अवगुण है।
3. फूल का गुण है सुगंध प्रदान करना और दूसरों को सुकून देना।
4. काँटा सबकी आँखों में खटकता है।
5. फूल देवताओं के शीश पर शोभा देता है।

- **लिखित**

1. काँटा लोगों की उँगलियों को फाड़ देता है, तितलियों के पंख चीर देता है तथा भौंरों के शरीर को बेध देता है।

2. फूल तितलियों तथा भौंरों को अपना रस पिलाता है। सबके मन को भाता है तथा देवताओं के ऊपर चढ़ाया जाता है।
3. फूल सबको सुकून पहुँचाता है, जबकि काँटा दूसरों को कष्ट पहुँचाता है।
4. प्रकृति के तत्व– हवाएँ, बादल, चाँदनी तथा सूरज फूल और काँटे पर अपना प्रभाव डालते हैं।
5. आदमी की प्रशंसा उसके गुणों के कारण होती है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. **संदर्भ व प्रसंग –** प्रस्तुत कविता 'फूल और काँटे' हमारी पाठ्यपुस्तक 'उमंग' से ली गई है। इसके रचयिता अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी हैं। इसमें फूल और काँटे के माध्यम से व्यक्ति के स्वभाव का वर्णन किया गया है।

   व्याख्या– कवि कहता है कि फूल और काँटा दोनों ही एक ही स्थान पर जन्म लेते हैं किन्तु दोनों के स्वभाव भिन्न-भिन्न हैं। काँटा अपने स्वभाववश सबको कष्ट पहुँचाता है। वहीं फूल अपने स्वभाव के कारण मंदिरों में चढ़ाया जाता है।

   कवि फूल और काँटे का उदाहरण देते हुए कहता है कि अच्छे कुल में जन्म पा लेना बड़ी बात नहीं है। यदि किसी में अच्छाई का गुण नहीं है अर्थात् व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से बड़ा होता है।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) 4. (क)
2. (ख) 5. (ख)
3. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. 'फूल और काँटे' कविता से हमें यह संदेश मिलता है कि व्यक्ति जन्म से नहीं, बल्कि कर्म से बड़ा होता है। जो अच्छे कर्म करता है, सबका कल्याण करता है, उसकी समाज में पूजा होती है। जो गलत कार्य करता है, दूसरों को कष्ट पहुँचाता है, समाज उसकी निन्दा करती है।
2. कविता में फूल अच्छाई का प्रतीक है, जबकि काँटा बुराई का प्रतीक है। क्योंकि फूल अपने अच्छे गुणों के कारण सबको सुहाता है, जबकि काँटा अपने अवगुणों के कारण निन्दा पाता है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. पंक्तियों का आशय : कवि कहता है कि व्यक्ति की बड़ाई उसके कर्मों से होती है, न कि उसके कुल से।
2. यह पंक्ति काँटे के स्वभाव को दर्शाती है। काँटा सबकी आँख में खटकता है अर्थात् दुर्जन समाज को कष्ट पहुँचाता है और सबके लिए परेशानी बन जाता है।
3. 'फूल और काँटे' एक ही पौधे पर एक ही वातावरण में पलते हैं फिर भी उनका स्वभाव भिन्न होता है। यह सिद्ध करता है कि परिस्थिति समान होने पर भी व्यक्ति का चरित्र अलग हो सकता है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. हैं जनम लेते जगह में एक ही, <u>एक ही पौधा उन्हें है पालता</u>।
2. मेह उन पर है बरसता एक सा, <u>एक सी उन पर हवायें हैं बही</u>।
3. छेदकर काँटा किसी की उँगलियाँ, <u>फाड़ देता है किसी का वर बसन।</u>
4. फूल लेकर तितलियों को गोद में, <u>भौंर को अपना अनूठा रस पिला।</u>

- **सही-गलत**

   1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✗)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. मैं फूल के गुणों को अपनाना चाहूँगा।

   फूल सबको खुशी देता है, सुगंध फैलाता है और किसी को कष्ट नहीं पहुँचाता। लोग फूल को सम्मान देते हैं। अत: समाज में आदर करने के लिए फूल के गुणों को अपनाना ही श्रेष्ठ है।
2. यदि मुझे कुछ पौधे लगाने हों तो मैं नीम, तुलसी, आम तथा गुलाब के पौधे लगाऊँगा।
   - नीम और तुलसी के पौधे औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं।

- आम मधुर फल देता है।
- गुलाब वातावरण को सुंदरता प्रदान करता है।

देखभाल : मैं पौधों को नियमित पानी दूँगा। समय-समय पर खाद डालूँगा। पशुओं से उनकी सुरक्षा के लिए बाड़ लगाऊँगा।

- **भाषा आधारित**

1. (क) मैं विद्यालय जा रहा हूँ।
   (ख) वह अच्छा गाती है।
   (ग) हम सब मिलकर काम करेंगे।
   (घ) यह मेरी पुस्तक है।
2. (क) चाँद – चंद्रमा, शशि
   (ख) हवा – वायु, पवन
   (ग) वसन – वस्त्र, चीर
   (घ) तन – शरीर, देह
   (ङ) गोद – अंक, हथेली
   (च) निराला – अनोखा, अनुपम
3. (क) रात - दिन
   (ख) श्याम - श्वेत
   (ग) सुगंध - दुर्गंध
   (घ) जन्म - मृत्यु
   (ङ) बड़प्पन - नीचपन
   (च) सुर – असुर
4. (क) बड़ा - बड़प्पन
   (ख) अनूठा - अनूठापन
   (ग) निराला - निरालापन
   (घ) पालना - पालन
   (ङ) बरसना - वर्षा, बरसात
   (च) चमकना - चमक, चमकीलापन
5. (क) अभि - अभिमान, अभिवादन
   (ख) अव - अवनति, अवगुण
   (ग) निर् - निर्भय, निर्मल
   (घ) प्रति - प्रतिदिन, प्रतिवर्ष
   (ङ) परि - परिवेश, परिक्रमा
   (च) अधि - अधिकार, अधिगम

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. यदि पौधों को हवा, बारिश, धूप न मिले तो वे नीरस और बेकार होकर सूख जाएँगे। इससे प्रकृति असंतुलित हो जाएगी। सभी जीव-जंतुओं का आश्रय छिन जाएगा।
2. यदि सभी फूल एक ही रंग के एक ही सुगंध के हों तो प्रकृति उबाऊ लगने लगेगी। वातावरण का आकर्षण समाप्त हो जाएगा।
3. छात्र स्वयं करें।

5. माँ की याद

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. गर्मियों की छुट्टियों में चेतन के घर मौसाजी आए।
2. क्योंकि वह अपनी माँ से दूर नहीं होना चाहता था।
3. मौसाजी के घर में दो बच्चे थे– रजत और लावण्या।
4. रजत ने किचन में चटनी बनायी थी।
5. चेतन रजत भैया के किचन में होने का नाम सुनकर ठिठका।

- **लिखित**

1. चेतन के मौसाजी ने यह कहकर राजी किया कि जब तुम्हें माँ की याद आए तो माँ कहना और मौसी हाजिर हो जाएँगी।
2. रजत को फर्श पर पोंछा लगाते देखकर चेतन को आश्चर्य हुआ।
3. कैरम खेलते समय चेतन का मन अनमना हो गया था क्योंकि उसे अपनी माँ की याद आ रही थी।
4. माँ से वीडियोकॉल पर चेतन ने कहा कि माँ मैं ठीक हूँ, नाश्ता करने जा रहा हूँ। मैंने आपके लिए कुछ सोचा है, जब आऊँगा तब बताऊँगा।

- **प्रत्यास्मरण**

1. क्योंकि माँ की याद आने के कारण चेतन का गला रूँध सा गया था, वह रूआँसा हो गया था।
2. माँ को मोबाइल पर चेतन का चेहरा साफ दिखाई दे रहा था।
3. चेतन ने स्वयं को पूरी तरह बदलने का निश्चय कर लिया था।
4. मौसी ने एक पकौड़ी मुँह में रखकर चेतन की रुलाई को आने नहीं दिया।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) 4. (क)
2. (ग) 5. (ग)
3. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. माँ ने ऐसा इसलिए कहा होगा ताकि वह चेतन को मौसा जी के साथ भेज सके और इस प्रकार चेतन माँ से अलग रहकर जीने का अभ्यास कर सके।
2. चेतन के मन में हेकड़ी और उपहास इसलिए था क्योंकि वह अपने घर में सबका लाड़ला था। वह घर के किसी भी काम में हाथ नहीं बँटाता था। उसे लगता था कि घर के काम लड़कों को नहीं करने चाहिए।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का आशय है कि मेरा मन उदास है और मुझे किसी (माँ) की याद आ रही है।
2. यह पंक्ति गहरे लगाव और तड़प को दर्शाती है। चेतन अपनी माँ से बात करने के लिए व्याकुल है। इसीलिए वह मौसी जी से अनुरोध कर रहा है।
3. इस पंक्ति का आशय यह है कि चेतन अपनी माँ से दूर जाने पर एक तो माँ के लिए बेचैन हो गया था तथा दूसरे वे मौसीजी के यहाँ से सीखी कुछ बातें जैसे माँ के साथ काम में हाथ बँटाना, उनके साथ विनम्र भाव अपनाना आदि के द्वारा वह उन्हें खुश करना चाहता था।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. मोबाइल
2. मौसा जी
3. घर
4. मौका
5. फीका

- **किसने, किससे कहा?**

1. माँ ने चेतन से
2. चेतन ने रजत से
3. चेतन ने रजत से
4. रजत ने चेतन से
5. लावण्या ने चेतन से

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✗)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि मैं चेतन के स्थान पर होता तो अपने कुछ गुण मौसी के बच्चों को सिखाता और उनके अच्छे गुण स्वयं ग्रहण करता।
2. जब मैं माँ को छोड़कर रिश्तेदारी में अकेला रहता हूँ तो मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता, मन उदास रहता है।
3. हाँ, मैं अपनी माँ के साथ घर के कामों में हाथ बँटाना चाहता हूँ। मैं झाड़ू लगाना, बर्तन धोना, सब्जी काटना, साफ-सफाई करना आदि छोटे-मोटे काम करना पसंद करूँगा।
4. इसके उत्तरदायी कारण निम्नलिखित थे–
   - वह घर के कामों को छोटा समझता था।
   - उसे घर के काम उसकी शान के खिलाफ लगते थे।
   - उसे माँ की मेहनत का सही मूल समझ नहीं आता था।
   - उसे संस्कार और जिम्मेदारी का बोध नहीं था।

- **भाषा आधारित**

1. (ख) पूजा के लिए घर
   (ग) गंगा का जल
   (घ) ग्राम के वासी
2. (क) रामू की नौकरी लगने पर घर में घी के दिए जलाए गए।

(ख) पुरस्कार मिलने के बाद केतन के पाँव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।
(ग) अपने बच्चों की उन्नति देखकर माँ-बाप फूले नहीं समाते।
(घ) अचानक शिक्षक को देखकर बच्चे भौचक्के रह गए।

3. (क) गुब्बारे (घ) गोटियाँ
(ख) घोड़े (ङ) चीजें
(ग) बगीचे (च) छुट्टियाँ

4.

	शब्द	अर्थ
(क)	माँ	जन्म देने वाली

वाक्य-प्रयोग– हमें अपनी माँ का सम्मान करना चाहिए।

(ख) भाई — भ्राता या प्रिय संबंधी
वाक्य-प्रयोग– मेरा भाई मेरे हर काम में मदद करता है।

(ग) बहन — सहोदरी या प्रिय स्त्री
वाक्य-प्रयोग– मेरी बहन मुझे बहुत प्यार करती है।

(घ) घर — रहने का स्थान
वाक्य-प्रयोग– हमें अपने घर को स्वच्छ रखना चाहिए।

● **क्रियाकलाप आधारित**

1. प्रिय मित्र अमित,
सप्रेम नमस्ते!
मैं यहाँ ठीक हूँ। यहाँ आकर मुझमें बदलाव आया है। पहले मैं घर के कामों को बेकार समझता था, पर अब मुझे माँ की मेहनत का असली मूल समझ आया है। एक दिन मैं बीमार पड़ गया और माँ पास नहीं थी, तब मुझे एहसास हुआ कि माँ क्या होती है।
अब मैं निश्चय कर चुका हूँ कि घर लौटकर माँ के कामों में हाथ बँटाऊँगा। मुझमें यह बदलाव उसी घटना से हुआ है। शेष बातें मिलने पर होंगी।

तुम्हारा मित्र
चेतन

2. **सूजी का हलवा बनाने की विधि**
सामग्री – सूजी, घी, चीनी, पानी/दूध, काजू, किशमिश।
विधि– सबसे पहले कड़ाही में घी गर्म करें। उसमें सूजी डालकर हलका भूरा होने तक भूनें। फिर पानी या दूध डालें और चलाते रहें। जब सूजी पक जाए तो चीनी डालें। अंत में मेवे डालकर हलवे को अच्छी तरह मिला लें। स्वादिष्ट हलवा तैयार है।

3. छात्र स्वयं करें।

6. तीन कहानियाँ : स्टीव जॉब्स

अभ्यास

उच्चारण आधारित

● छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

● **मौखिक**

1. 'स्टेनफोर्ड' विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में।
2. केवल छह माह तक।
3. रीड कॉलेज से।
4. दूसरी कहानी का शीर्षक है - 'जीवन में कुछ पाना और खोना'।
5. मैकंतोश।

● **लिखित**

1. स्टीव जॉब्स ने पढ़ाई छोड़ने का निश्चय इसलिए किया क्योंकि उसे पढ़ाई की कोई उपयोगिता समझ में नहीं आई।
2. 'रीड कॉलेज' में सीखी 'कैलीग्राफी' स्टीव जॉब्स के द्वारा पहला कम्प्यूटर बनाने के काम आई।
3. एप्पल कंपनी से बाहर होने के बाद स्टीव जॉब्स ने 'नेक्स्ट' नामक कम्पनी की शुरुआत की।
4. जीवन और मृत्यु के बारे में स्टीव जॉब्स का विचार है कि जिन्दगी को ऐसे जीना चाहिए जैसे वह व्यक्ति की जिन्दगी का

आखिरी दिन हो। मृत्यु के बारे में उनका विचार है कि मृत्यु वह स्थान है, जहाँ सभी को पहुँचना है और यही जीवन का सबसे बड़ा आविष्कार है। इसलिए जिन्दगी को व्यर्थ नहीं खोना चाहिए।

5. स्टीव जॉब्स अपने श्रोताओं के लिए यही कामना करते हैं कि आपमें कुछ कर गुजरने की ललक होनी चाहिए। सीखते समय स्वयं को अज्ञानी समझें तभी आप कुछ सीख पाएँगे।

- **प्रत्यास्मरण**

1. स्टीव जॉब्स ने तीन कहानियाँ सुनाईं।
2. स्टीव जॉब्स अपनी बातों को विस्तार से बताने के लिए क्षमा चाहते हैं।
3. जब हम स्वयं को अनजान समझेंगे तभी सीखने की क्षमता प्राप्त कर सकेंगे।
4. स्टीव जॉब्स के अनुसार कुछ कर गुजरने की ललक हमेशा बनी रहनी चाहिए।

- **अपनी समझ से**

1. (क) 4. (ग)
2. (ख) 5. (ग)
3. (घ)

- **सोच-समझकर**

1. व्यक्ति अपने बीते समय के आधार पर अपनी सफलता की कड़ियों को जोड़ सकता है। इसके लिए उसे अपने कर्म पर, अपनी क्षमता पर तथा अपनी जिंदगी पर विश्वास करना होगा।
2. इस कथन का आशय है कि व्यक्ति को अपने जीवन को एक बहुमूल्य क्षण समझना चाहिए और इस अवसर को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। पूरे मन के साथ जीवन में कुछ कर दिखाने का प्रयत्न करना चाहिए।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति में वक्ता का आत्मविश्वास झलकता है जिसका आशय है कि उसके द्वारा लिया गया निर्णय ही उसके जीवन का आधार है जो उसके द्वारा लिए गए फैसलों में महत्वपूर्ण है।
2. इस पंक्ति का आशय है कि हमें जीवन में जो समय मिला है, वह बहुत ही मूल्यवान है। जीवन के इस अवसर को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।
3. इस पंक्ति का आशय है कि हमें अपनी जिंदगी के निर्णय स्वयं लेने चाहिए। जब हम स्वयं निर्णय लेकर आगे बढ़ेंगे तो पूर्ण आत्मविश्वास हमारे साथ होगा और हम अपने लक्ष्य तक सहज पहुँच सकेंगे।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. मैकंतोश 4. 2005
2. एप्पल 5. तीन
3. मृत्यु

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

- **सुमेलन**

1. (ग), 2. (घ), 3. (ङ), 4. (ख), 5. (क)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. हम अपने भविष्य की कड़ियाँ बीते हुए समय की शिक्षा, अनुभवों और अपनी लगन से जोड़ सकते हैं। बीते हुए समय से हम जो भी अच्छे अनुभव सीखते हैं, वे गुण हमारे आने वाले समय के लिए प्रेरणास्रोत बन जाते हैं।
2. मैं स्टीव जॉब्स के गुणों जैसे- जुनून, सरलता, असफलता से न डरना और नई सोच आदि को अपनाना चाहूँगा।
3. हाँ, मेरे विचार में यह कथन पूरी तरह सही है, इसके पीछे कुछ मुख्य कारण भी हैं, जैसे- परिवर्तन का माध्यम, समय की महत्ता और स्पष्टता आदि।

- **भाषा आधारित**

1. (क) स्टीव जॉब्स ने एप्पल की स्थापना की।
   (ख) स्टीव जॉब्स बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।
   (ग) जॉन स्कली के साथ मतभेद शुरू हो गया।
   (घ) कंपनी के भविष्य को लेकर डर समा रहा था।

(ङ) मेरी कहानियाँ समाप्त हुईं।

2. (क) पुस्तक + ईय = पुस्तकीय
(ख) विश्व + इक = वैश्विक
(ग) राष्ट्र + ईय = राष्ट्रीय
(घ) भारत + ईय = भारतीय
(ङ) विज्ञान + इक = वैज्ञानिक
(च) भूत + इक = भौतिक

3. (क) अंतः + मन (विसर्ग संधि)
(ख) विश्व + विद्यालय (विसर्ग संधि)
(ग) दीक्षा + अंत (दीर्घ संधि)
(घ) गौरव + अन्वित (दीर्घ संधि)
(ङ) दुः + कर (विसर्ग संधि)

4. (क) दुनिया – संसार, विश्व
(ख) मेहनत – परिश्रम, श्रम
(ग) मृत्यु – मौत, अंत
(घ) सुबह – सवेरा, प्रातः

● **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र स्वयं करें।

7. अवसर की पहचान

अभ्यास

उच्चारण आधारित

● छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

● **मौखिक**

1. मजबूरी।
2. उस रोज बारिश होने के कारण कोई दिखाई नहीं दे रहा था।
3. बाबू ने तीसरी शर्त में सौ रुपये देने को कहा।
4. अपनी कर्मठ माँ की पुरानी छवि बालक की नजरों के सामने आई।
5. काम से लौटते समय बालक की माँ एक कार से टकरा गई थी।

● **लिखित**

1. जब बालक की माँ की दोनों टाँगें काट दी गईं तब उसे अपना और अपनी माँ का पेट भरने के लिए भीख माँगने के लिए विवश होना पड़ा।
2. बाबू का कमरा धूल से भरा हुआ था, फर्श पर रेत-ही-रेत थी। चारों ओर मकड़ियों ने जाले लगा रखे थे। कमरे का सामान अस्त-व्यस्त पड़ा था।
3. दूसरी शर्त में बालक को उस बाबू के साथ कमरे के अंदर चलना था।
4. बाबू की तीन शर्तों के पीछे यह रहस्य दिया था कि जो व्यक्ति मेहनत से कभी घबराता नहीं है। सारे काम ठीक समय पर करता है, उसे एक-न-एक दिन सफलता अवश्य मिलती है।
5. बालक के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–
(i) उसके मन में सेवाभाव था।
(ii) वह कर्मठ था।
(iii) वह भविष्य के बारे में सोचता था।
(iv) वह स्वाभिमानी था।
(v) वह समय के महत्व को समझता था।

● **प्रत्यास्मरण**

1. बालक ने तीनों शर्तों की गाँठ को नहीं खुलने दिया।
2. बालक ने नुक्कड़ में रेहड़ी लगाकर, कभी पतंग, कभी होली के रंग तो कभी खिलौने बेचकर अपना जीवन निर्वाह किया।
3. बालक की जिदंगी बाबूजी की तीन शर्तो ने बदल दी थी।
4. जो सही अवसर को पहचान जाता है, वही सफल होता है।

● **अपनी समझ से**

1. (क)
2. (ख)
3. (घ)
4. (क)
5. (घ)

● **सोच-समझकर**

1. "बाबू दो शर्तें जीती हैं, तीसरी हारना नहीं

चाहूँगा।" इस कथन से बालक के आगे बढ़ने, कुछ कर दिखाने यानी दृढ़-निश्चय तथा आत्मविश्वास के गुण प्रकट होते हैं।

2. इस कथन का आशय यह है कि व्यक्ति के जीवन में अवसर बार-बार नहीं आता और जो इसकी पहचानकर इसका लाभ उठा लेता है। वही सफल हो जाता है। अवसर चूक जाने पर व्यक्ति को जीवन भर पछताना पड़ता है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. बालक अत्यधिक भूख से पीड़ित था। उसे उसका पेट गहरे कुएँ के समान प्रतीत हो रहा था।
2. बाबू ने बालक की गरीबी, मजबूरी और असहायपन को समझ लिया था।
3. बाबू द्वारा दी गई तीन शर्तों ने बालक का सही मार्गदर्शन किया जिससे उसके जीवन की दिशा बदल गई।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. पालन-पोषण 4. गाँठ
2. शर्त 5. विलक्षण
3. शर्त

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✗), 5. (✓)।

- **क्रम संयोजन**

1. (4), 2. (5), 3. (7), 4. (1), 5. (6), 6. (2), 7. (3)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. मनुष्य के जीवन में समय और अवसर का विशेष महत्व होता है। समय पर किया गया कार्य सफल होता है, जबकि देर करने पर अवसर हाथ से निकल जाता है। जो व्यक्ति मिले हुए समय और उसके सही अवसर को पहचानता है, वही आगे बढ़ पाता है।
2. जीवन में अनेक अवसर आते हैं, लेकिन जो सही समय पर सही निर्णय ले पाता है, वह व्यक्ति सफल हो जाता है। अवसर का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति कभी असफल नहीं होता। इसलिए सही कहा गया है कि जो सही अवसर को पहचान जाता है, वही सफल होता है।

- **भाषा आधारित**

1. (क) वज़ह (ख) तेज़
(ग) ज़ाहिर (च) ज़िद
(घ) साफ़ (छ) फ़ैसला
(ङ) आवाज़ (ज) मंज़िल

2. (क) बीमार – स्वस्थ
(ख) शर्म – गर्व
(ग) अच्छा – बुरा
(घ) दुआ – बद्दुआ
(ङ) मुश्किल – आसान
(च) चालाक – सीधा, भोला
(छ) कर्कश – मधुर
(ज) सफल – असफल

3. **(क) थरथर काँपना –** भयभीत हो जाना।
वाक्य-प्रयोग– भूकंप के समय लोग थरथर काँपने लगे।
(ख) पीठ थपथपाना – शाबासी देना।
वाक्य-प्रयोग– रामू की मेहनत से खुश होकर माँ ने पीठ थपथपाई।
(ग) आँखें फटी की फटी रह जाना – आश्चर्यचकित रह जाना।
वाक्य-प्रयोग– छोटे बच्चे का करतब देखकर लोगों की आँखें फटी-की-फटी रह गईं।
(घ) गाँठ बाँधना – संकल्प करना।
वाक्य-प्रयोग– चोरी करने पर सजा पाकर बालक ने गाँठ बाँध ली कि वह यह गलती कभी नहीं दोहराएगा।
(ङ) मुकर जाना – बात से पीछे हट जाना।
वाक्य-प्रयोग– अच्छे व्यक्ति अपनी बात से कभी नहीं मुकरते।
(च) सहम जाना – डर जाना।
वाक्य-प्रयोग– रामू गली में खूँखार कुत्ते को देखकर सहम गया।

4. (क) बदलाव – ब् + अ + द् + अ + ल् + आ + व् + अ।
(ख) भिखारी – भ् + इ + ख् + आ + र् + ई।
(ग) निकालने – न् + इ + क् + आ + ल् + अ + न् + ए।
(घ) म् + अ + ह् + अ + त् + व् + अ + प् + ऊ + र् + ण् + अ।
(ङ) विलक्षण – व् + इ + ल् + अ + क् + ष् + अ + ण् + अ।

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कठिन परिस्थितियों में जीवन बिताया, किन्तु परिश्रम

और लगन के द्वारा देश के राष्ट्रपति बने।

2. **भिक्षावृत्ति**

वर्तमान समय में भिक्षावृत्ति समाज में एक गम्भीर समस्या है। इस प्रवृत्ति को अपनाने के पीछे लोगों के कई कारण हैं। कुछ लोग मजबूरी के कारण भीख माँगने को विवश हो जाते हैं। हम अक्सर बस-स्टैंड, रेलवे स्टेशनों आदि में लोगों को भीख माँगते देखते हैं। कुछ लोग इसे अपनी आजीविका का साधन भी बना लेते हैं, जो समाज के लिए उचित नहीं है।

भीख माँगने से व्यक्ति का सम्मान व स्वाभिमान समाप्त हो जाता है और सामाजिक प्रगति रुक जाती है। इस समस्या के समाधान हेतु सरकार लोगों को सरकारी सहायता प्रदान करती है। समाज को जागरूक होकर ऐसे लोगों को राह दिखानी चाहिए और जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए।

3. हम इस समस्या के निदान के लिए लोगों को निम्नलिखित सुझाव देना चाहेंगे –

(i) सरकार को बाल संरक्षण कानून लागू करके कड़े कदम उठाने चाहिए।

(ii) इनके परिवार को सरकार द्वारा रोजगार उपलब्ध कराना चाहिए।

(iii) बच्चों को विद्यालय भेजना चाहिए।

(iv) लोगों को समाज में जागरूकता फैलाना चाहिए।

4. छात्र स्वयं करें। (संकेत– अपना कमरा स्वच्छ रखना। घर का सामान व्यवस्थित रखना तथा माता-पिताजी के साथ अन्य कामों में मदद करना।)

8. पेड़ों के संग बढ़ना सीखो

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. कवि बहुत दिनों से थोड़ी धरती पाने की सोच रहा था।
2. बाग-बगीचा लगाने के लिए।
3. बाग-बगीचा।
4. पक्षी।
5. आज सभ्यता वहशी बन गई है।

- **लिखित**

1. उपवन फूलों और फलों से लदे हुए हैं।
2. कवि मनुष्यों से यह विनती कर रहा है कि वह पेड़ों को न काटें क्योंकि वे पक्षियों का आवास हैं।
3. शाखाएँ कटने पर पेड़ भोले शिशुओं जैसा रोते हैं।
4. सभ्यता इंसानों को जहर बाँट रही है।
5. हमें पेड़-पौधों का संरक्षण करना चाहिए। मानव-जीवन इन्हीं पर आश्रित है। यदि जंगल नहीं रहेंगे तो जीवन संकट में पड़ जाएगा।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ व प्रसंग : ये पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'उमंग' के 'पेड़ों के संग बढ़ना सीखो' शीर्षक से ली गई हैं, जिसके लेखक सर्वेश्वर दयाल 'सक्सेना' हैं। इनके माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति चिंता व्यक्त की गई है।

व्याख्या : कवि कहता है कि बच्चे और पेड़-पौधे दोनों ही इस दुनिया को हरा-भरा बनाते हैं। किन्तु मानव यह नहीं समझता कि वह जिस सुख-सुविधा का उपयोग कर रहा है, उसका आधार पेड़ ही हैं। लोग इस बात को नहीं समझते हैं और विकास के नाम पर लगातार पेड़ों को काटते हैं।

इसके परिणामस्वरूप जहरीली हवा फैल रही है, जो हमारे फेफड़ों में पहुँचकर स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा रही है।

कवि लोगों को इस प्रकार सचेत कर रहा है कि यदि उसने प्रकृति का सम्मान नहीं किया तो उसका जीवन संकट में पड़ जाएगा।

- **अपनी समझ से**

1. (घ)
2. (घ)
3. (घ)
4. (ग)
5. (क)

- **सोच-समझकर**

1. सभ्यता के वहशी बनने से कवि का तात्पर्य है कि समाज में रहकर व्यक्ति समाज के लिए ही अभिशाप बन रहा है।
2. कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि पेड़-पौधे ही मानव समाज का आधार हैं। वे हमें जीवन प्रदान करते हैं और हमारे वातावरण को हरा-भरा व जीवंत बनाते हैं। हमें पर्यावरण के संरक्षण में सहयोग करना चाहिए। पेड़ लगाने चाहिए और इन्हें कटने से बचाना चाहिए। अगर पेड़ नहीं रहेंगे तो प्राणी समाज खतरे में पड़ जाएगा।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. बच्चे और पेड़ दुनिया को हरा-भरा रखते हैं।
   नहीं समझते जो, वे दुष्कर्मों का फल चखते हैं।
   आज सभ्यता वहशी बन, पेड़ों को काट रही है,
   जहर फेफड़ों में भरकर सब को बाँट रही है।

- **सही-गलत**

  1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✓)।

- **सुमेलन**

  1. (ग), 2. (घ), 3. (ङ), 4. (ख), 5. (क)।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का आशय है कि हमें पेड़ों का संरक्षण करते हुए उनके साथ-साथ समाज में आगे बढ़ना चाहिए। पेड़ जिस तरह वातावरण को हरा-भरा रखते हैं। उसी तरह हमको भी समाज के लिए कुछ अच्छे कार्य करने चाहिए।
2. इस पंक्ति का आशय है कि मानव समाज आज स्वार्थभाव से प्रेरित हो चुका है। वह विकास के नाम पर पेड़-पौधों को क्षति पहुँचा रहा है। वह स्वार्थ के अंधेपन में अपने संरक्षक का ही शोषण कर रहा है।
3. इस पंक्ति का आशय है कि कवि अपने विचार व्यक्त करते हुए कहता है कि काश! उसके पास कुछ ऐसी जमीन होती जो परती पड़ी होती अर्थात् जिसमें फसल न होती हो, उसमें कवि पेड़-पौधे लगाता।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. मनुष्य प्रकृति के साथ अनेक दुष्कर्म कर रहा है। वह पेड़-पौधों को काटता जा रहा है तथा रासायनिक पदार्थों को बढ़ावा दे रहा है। वायु को धुएँ से प्रदूषित करता जा रहा है तथा पहाड़ों को खोदकर संतुलन बिगाड़ रहा है। प्रकृति से अधिक पाने की लालसा में वह भूल गया है कि पर्यावरण का संकट मंडराता जा रहा है।
2. छात्र स्वयं करें।

- **भाषा आधारित**

1. कविता में आए सा/सी वाले उदाहरण–
   छोटी-सी खेती हो, फूल-फलों से लदे बगीचे, छोटी-सी क्यारी हो।
2. (क) धरती – भू, धरा।
   (ख) बाग – बगीचा, उपवन।
   (ग) फूल – पुष्प, सुमन।
   (घ) जलाशय – तड़ाग, तालाब।
   (ङ) पक्षी – खग, विहग।
   (च) पेड़ – तरु, वृक्ष।
3. (क) थोड़ा – ज़्यादा।
   (ख) खुशबू – बदबू।
   (ग) ताजी – बासी।
   (घ) शांत – अशांत।
   (ङ) खोना - पाना।
   (च) दुष्कर्म – सत्कर्म।
4. (क) धरती – पृथ्वी – ये धरती सबको जीवन देती है।
   (ख) खुशबू – सुगंध – फूलों की खुशबू सबको भाती है।
   (ग) उपवन – बगीचा – हमारे विद्यालय में एक उपवन है।
   (घ) दुनिया - संसार – पूरी दुनिया को पेड़ों की जरूरत है।

(ङ) जहर – विष – प्रदूषण हवा में जहर घोल रहा है।

- **क्रियाकलाप आधारित**

3. प्रिय भाई

   सप्रेम नमस्ते।

   हम यहाँ सकुशल हैं। आज मैं तुम्हें पर्यावरण प्रदूषण के बारे में बताना चाहता हूँ। प्रदूषण से हवा, पानी, मिट्टी सब दूषित हो रहे हैं; जिससे बीमारियाँ बढ़ रही हैं। अतः इससे छुटकारा पाने के लिए अधिक-से-अधिक पेड़ लगाने चाहिए और पर्यावरण सुरक्षा को अपनाना चाहिए। आशा है तुम इन बातों का ध्यान रखोगे।

   तुम्हारा भाई

   XYZ

4. **वृक्ष हमारे साथी**

   वृक्ष हमारे सच्चे साथी हैं। वे हमें ऑक्सीजन, फल, फूल व छाया देते हैं। पक्षियों और जानवरों को आश्रय देते हैं। बिना किसी स्वार्थ के मानव की रक्षा करते हैं। इसलिए हमें इन्हें नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए, बल्कि इनका संरक्षण करना चाहिए। यदि वृक्ष नहीं होंगे तो प्राणी जगत संकट में पड़ जाएगा।

5. छात्र स्वयं करें।

9. साबूदाने की खीर

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. नानी पड़ोसी सुधाकर काका को देखने अस्पताल गई थी।
2. बड़ा ही आरामदायक और सुविधापूर्ण।
3. साबूदाने की खीर खाने को मिलने के कारण।
4. बुखार।
5. नाना ने बीमारी दूर करने के लिए भूखे रहना उपाय बताया।

- **लिखित**

1. बालक ने ऐसा इसलिए सोचा क्योंकि उसे अस्पताल का माहौल और वहाँ मरीजों के ठाठ यानि देखरेख उसे पसंद आयी थी।
2. नाना जी के अनुसार बीमारी का प्रमुख कारण था तबीयत ढीली होना और उसे भूखे रहकर दूर किया जा सकता है।
3. बालक ने थर्मामीटर की माँग यह सोचकर की कि थर्मामीटर देखने वाला घर में कोई नहीं है। आखिर कौन देखेगा?
4. नाना ने बालक को कड़वी पुड़िया और काढ़े जैसी चाय दी।
5. उस दिन खाने में अरहर की दाल-चावल बघार के साथ।

- **प्रत्यास्मरण**

1. इस मौसम में आम बम्बई से आए होंगे।
2. बीमार बालक आम खाने वाले बालक को भुक्कड़ कहता है। इससे उसके मन से ईर्ष्या का भाव व्यक्त होता है।
3. बिस्तर के पास वापस आते समय बालक के मन में ईर्ष्या और झुँझलाहट के भाव आ रहे थे।
4. इसके बाद स्कूल से छुट्टी मारने के लिए बालक ने फिर कभी बहाना नहीं बनाया।

- **अपनी समझ से**

1. (घ)
2. (ग)
3. (ख)
4. (क)
5. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. बालक जब नानी के साथ अस्पताल गया तो उसे वहाँ का माहौल, बीमारों की देखभाल, खिड़कियों के पास हरे-भरे पेड़ झूलते, वहाँ की स्वच्छता तथा शांत वातावरण अच्छा लगा।
2. बालक ने ऐसा इसलिए सोचा होगा क्योंकि

साबूदाने की खीर खाने को भी नहीं मिली और ऊपर से भूखा रहना पड़ा। साथ ही कड़वी पुड़िया खाना और काढ़ा पीना पड़ा।

3. नाना ने बालक के साथ जो किया मेरी दृष्टि में वह बिल्कुल उचित था, क्योंकि उपवास से खाने-पीने से संबंधित बीमारियों में लाभ मिलता है और प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति में बालक के मासूम मनोभाव प्रकट होते हैं। सुधाकर काका की देखरेख और अस्पताल की स्वच्छता व सुविधा को देखकर, वह बीमारी को कष्ट नहीं बल्कि सुख का साधान समझने लगता है। उसे लगता है कि यदि वह बीमार होता तो उसे सुविधाओं के साथ-साथ स्कूल जाने से भी छुटकारा मिलता है, जो उसकी नासमझी को प्रकट करता है।
2. इस पंक्ति में बालक अपने मन के भाव को एक व्यंग्य के रूप में प्रकट करता है कि उसे केवल साधारण सी खीर ही की तो इच्छा थी। कोई बहुत महँगी चीज तो नहीं माँगी थी। इससे उसके बाल मन की सरल इच्छा प्रकट होती है।
3. इस पंक्ति से बालक के अनुभव और सीख का पता चलता है। इस घटना के बाद उसे समझ आ जाता है कि बीमारी कोई सुखद बात नहीं है और वह स्कूल से छुट्टी लेने के लिए बीमारी का बहाना बनाना छोड़ देता है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. थर्मामीटर 2. नींद
3. शिकार 4. दाल-चावल
5. चाचाजी।

- **किसने, किससे कहा?**

1. नाना जी ने बालक से।
2. बालक ने नानी जी से।
3. नाना जी ने बालक से।
4. नाना जी ने नानी जी से।
5. बालक ने नाना जी से।

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. स्कूल का होमवर्क पूरा न होने पर बालक ने स्कूल न जाने का बहाना बनाया। ऐसा करना मेरे विचार से उचित नहीं था क्योंकि इस प्रकार उसका दूसरे दिन का काम बढ़ गया। साथ ही बहाना बनाना गलत आदत है।
2. कहानी का अस्पताल शांत और सुव्यवस्थित था, जबकि मैंने जो अस्पताल देखा वह अधिक भीड़-भाड़ वाला और आधुनिक मशीनों से युक्त था।
3. यदि बालक सारी कहानी अपने नाना-नानी को बता देता तो उसे समझाया जाता और साबूदाने की खीर खिलाई जाती। इस प्रकार कहानी का अंत सुखद होता।

- **भाषा आधारित**

1.

	उद्देश्य	विधेय
(क)	सुधाकर काका	अस्पताल में भर्ती थे।
(ख)	नानी ने	साबूदाने की खीर बनाई।
(ग)	मुम्बई वाले चाचाजी	आम लेकर आए।
(घ)	परिश्रम	सफलता की कुँजी है।
(ङ)	निखिल	अस्पताल देखने गया था।

2. (क) प्रतिदिन, दिनभर
(ख) विनम्र, विनम्रता।
(ग) निडर, डरावना।
(घ) सजल, जलन।
(ङ) दुस्साहस, साहसी।
(च) असत्य, सत्यता।

3. **वचन परिवर्तन द्वारा वाक्य प्रयोग**

बालक – बालकगण

- सभी बालकगण मैदान में पहुँचे।

वस्तु – वस्तुएँ

- बाजार में तरह-तरह की वस्तुएँ बिकती थीं।

दीवार – दीवारें

- लालकिले की दीवारें ऊँची बनाई गई हैं।

थैली – थैलियाँ

- सरदार के साथियों ने मोहरों से भरी थैलियाँ निकालीं।

लिंग परिवर्तन द्वारा वाक्य-प्रयोग

गुड़िया – गुड्डा

- रमा का गुड्डा कोट-पेंट पहने था।

अध्यापिका – अध्यापक

- अध्यापक ने छात्र की बड़ी प्रशंसा की।

अभिनेता – अभिनेत्री

- अपने नृत्य अभिनय द्वारा अभिनेत्री ने दर्शकों का दिल जीत लिया।

सास – ससुर

- राजा दशरथ सीताजी के ससुर थे।

4. 1. दीन-दुखियों की सेवा करना सभी का कर्त्तव्य है।
   2. हंस को देखकर रुचिका हँस पड़ी।
   3. शब्दकोश में शब्द-समूह मिलता है।
   4. बच्चों ने मैदान पर फैला कूड़ा-करकट इकट्ठा किया।
   5. सेहत के लिए खेलना-कूदना अच्छा होता है।
   6. इंटरनेट की सुविधा गाँव-गाँव में उपलब्ध है।

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. यह घटना उतरते जाड़े के मौसम की हो सकती है क्योंकि बालक ने रजाई ओढ़ रखी है और दूसरे, मुन्नू आम खा रहा है जो फरवरी माह में मुम्बई में आने लगते हैं।
2. साबूदाने की खीर बनाने की विधि– सबसे पहले साबूदाना भिगो दिया जाता है। फिर दूध उबालकर उसमें साबूदाना डाला जाता है। बाद में चीनी तथा इलायची डालकर खीर पकाई जाती है।
3. छात्र स्वयं करें।
4. कहानी : अस्पताल का रिसेप्शन
   एक दिन मोहन अपने दादाजी को लेकर अस्पताल गया। दादाजी को चलने में परेशानी हो रही थी। उसने दादाजी को व्हीलचेयर में बिठाया और रिसेप्शन में बैठी महिला डॉक्टर से पूछताछ की और पर्चा बनवाया। डॉक्टर ने दादा जी की परेशानी के बारे में पूछा और 2 नंबर कमरे का पर्चा बना दिया। मोहन ने 2 नंबर कमरे में जाकर अपने दादाजी को दिखाया। वहाँ पर बैठे डॉक्टर ने दादाजी को देखा और दवा लिखी। फिर मोहन दादाजी को लेकर घर आ गया।

10. सम्राट अशोक का शस्त्र त्याग

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. अशोक मगध के सम्राट थे।
2. सम्राट अशोक की सैनिक छावनी एक मैदान में बनी थी, क्योंकि उनकी सेना ने कलिंग पर चढ़ाई की हुई थी।
3. कलिंग के महाराज की पुत्री पदमा।
4. सम्राट अशोक ने अपने सामने युद्ध में खड़ी स्त्रियों को देखकर शस्त्र-त्याग का निश्चय किया।
5. सम्राट अशोक ने शस्त्र-त्याग करके बौद्ध धर्म ग्रहण किया।

- **लिखित**

1. मुझे कलिंग महाराt की पुत्री पद्मा का अभिनय पात्र सबसे अधिक प्रभावशाली लगा। पद्मा ने पराधीनता न स्वीकार करते हुए युद्ध लड़ने का चुनाव किया, जो उ**lds साहस और शौ**र्य का परिचय देता है।
2. राजकुमारी पद्मा की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –
   (प) वाक्चातुर्य – राजकुमारी वाक् चातुर्य में प्रवीण है। अपनी ओजपूण**kZ 'ाब्दावली से बा**की समुदाय के अंदर साहस और शक्ति का संचार करके उन्हें युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया।
   (पप) अदम्य साहस – पद्मा के अंदर साहस कूट-कूट कर भरा है। इसीलिए **og lम्राट अशोक** जैसे शासक के सामने बिना भय के खड़ी होती है और उन्हें युद्ध के लिए ललकारती है।
   (पपप) दया भावना– राजकुमारी पद्मा एक कुशल वीरांगना होने के साथ-साथ दयावान

भी है। क्योंकि जब सम्राट अशोक शस्त्र त्याग देते हैं, तब वह उन पर हमला न करके अपनी दया भावना का प्रमाण देती है।

3. राजकुमारी पद्मा को सैनिक वेश में देखकर सम्राट अशोक के मन में शस्त्र त्यागकर अपने किए पर प्रायश्चित करने का विचार आया।
4. राजकुमारी पद्मा के ललकारने पर भी सम्राट अशोक युद्ध के लिए तैयार नहीं हुए क्योंकि वे स्त्रियों पर शस्त्र उठाना शास्त्र विरुद्ध समझते थे।
5. कलिंग महाराज के मारे जाने तथा उनके सेना**ति को कैद** करने की अनुकूल परिस्थितियों के बावजूद भी मगध सेना कलिंग पर अधिकार करने में असफल रही।

स प्रत्यास्मरण

1. सभी सैनिक अपनी तलवारें नीचे फेंक देते हैं।
2. सम्राट अशोक राजकुमारी के सामने सिर झुकाते हैं क्योंकि वे स्त्रियों से युद्ध करने के लिए मना कर देते हैं।
3. र**जकुमारी पद्मा** सम्राट से युद्ध चाहती है।
4. सम्राट राजकु**री पद्मा को** कभी युद्ध न करने का वचन देते हैं।

स अपनी समझ से

1. (ग) 4. (ख)
2. (घ) 5. (ग)
3. (ख)

स सोच-समझकर

1. कलिंग युद्ध से पहले सम्राट अशोक एक महत्वाकांक्षी और शक्तिशाली शासक थे। वे अपने साम्राज्य का विस्तार चाहते थे।
   कलिंग युद्ध में हुई जनहानि और विधवा स्त्रियों को शस्त्र धारण किए देखकर उनका हृदय परिवर्तन हो जाता है और बाद में शस्त्र त्याग का निर्णय लेकर वे बौद्ध धर्म के अनुयायी हो जाते हैं।
2. पराधीन व्यक्ति सपने में भी सुखी नहीं रह सकता। ऐसा विचार करके कलिंग की स्त्रियाँ शस्त्र धारण करती हैं और वे युद्ध के लिए सम्राट अशोक के समक्ष तैनात हो जाती हैं। वे शस्त्रु के सामने आत्मसमर्पण न करके युद्ध का निर्णय लेत **हैं। पराधीनता से क**हीं अच्छा है युद्ध करते हुए अपने देश और अपनी आन के लिए युद्ध में शहीद हो जाना।

स पंक्तियों पर चर्चा

1. फाटक की ओर देखना किसी आश्चर्य घटना की ओर संकेत करता है। मगध सैनिक कलिंग का फाटक न खुलने पर बहुत सोच-विचार में पड़ जाते हैं। उनकी तलवारें खिंची की खिंची रह जाती हैं कि सैनिक भय और विस्मय में पड़े हुए हैं। ऐसा तनावपूर्ण वातावरण उनके सामने भय और संदेह पैदा करता है।
2. यह पंक्ति युद्ध की अमानवीयता और करुण सच्चाई को उजागर करती है। विजय की लालसा के कारण शासक भूल जाते हैं कि माताओं के पुत्र और स्त्रियों के सुहाग युद्ध में छिन जाते हैं।
   यह पंक्ति युद्ध विरोधी भावना और मानवीय संवेदना को प्रकट करती है।
3. यह पंक्ति भयंकर जन हानि और करुणा को देखकर हृदय परिवर्तन की ओर संकेत करती है। एक महत्वाकांक्षी शासक को शस्त्र त्यागने और कठोर निर्णयों से दूर रहने के लिए प्रेरित करती है।

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✓), 6. (✓), 7. (✗)।

- **क्रम-संयोजन**

1. (4), 2. (1), 3. (3), 4. (7), 5. (6), 6. (5), 7. (2)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. मेरे विचार से सम्राट अशोक ने शस्त्र त्यागकर बौद्ध धर्म इसलिए स्वीकार किया क्योंकि कलिंग के युद्ध में भयंकर जनहानि और लाखों विधवाओं को देखकर उनका हृदय परिवर्तन हो गया। उन्होंने अपने अमानवीय निर्णयों और क्रूर कृत्यों के प्रायश्चित हेतु शस्त्र त्यागकर बौद्ध धर्म धारण किया।
2. युद्धोन्माद मानव समाज के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इससे निम्नलिखित हानियाँ होती हैं –
   (i) इससे विकास रुक जाता है।

(ii) धन और जन की हानि होती है।
(iii) चारों ओर पाप और अत्याचार बढ़ता है।
(iv) समाज में अमानवीयता का संचार होता है।
(v) मानसिक तनाव व भय फैलता है।

● **भाषा आधारित**

1. (क) निर् + अपराधी – व्यंजन संधि
(ख) पूर्ण + आहुति – दीर्घ संधि
(ग) सदा + आवर्त – दीर्घ संधि
(घ) आत्म + उत्सर्ग – गुण संधि
2. (क) महान है जिसका राज – कर्मधारय समास
(ख) सेना का पति – षष्ठी तत्पुरुष समास
(ग) शस्त्रों से सज्जित – तृतीय तत्पुरुष समास
(घ) युद्ध की भूमि – षष्ठी तत्पुरुष समास
(ङ) कलिंग का दुर्ग – षष्ठी तत्पुरुष समास
(च) राजा की कुमारी – षष्ठी तत्पुरुष समास
(छ) बिना हथियार के – बहुव्रीहि समास
(ज) हिंसा का अभाव – नञ् तत्पुरुष समास
3. **(क) लोहा लेना –** डटकर मुकाबला करना।
वाक्य-प्रयोग– स्वंत्रतता सेनानियों ने अंग्रेजों से लोहा लिया।
(ख) आँखें बंद कर लेना – नजर अंदाज करना।
वाक्य-प्रयोग– गलत बातों पर आँखें बंद कर लेना शोभा नहीं देता।
(ग) माँग का सिंदूर पोंछना – पति की मृत्यु होना।
वाक्य-प्रयोग– युद्ध ने अनेक स्त्रियों की माँग सिंदूर पोंछ दिया।
(घ) खून की प्यास बुझाना – हत्या करके प्रतिशोध लेना।
वाक्य-प्रयोग– क्रूर शासक ने खून की प्यास बुझाने के लिए निर्दोषों को मरवा दिया।
4. (क) (प्रसन्नतापूर्वक) मारे गए हैं। तो मगध की विजय हुई है। कलिंग जीत लिया गया है!
(ख) सामने कलिंग-दुर्ग है, जिसका फाटक बंद है।
(ग) उनकी तलवारें खिंची-की-खिंची रह जाती हैं।
(घ) बहनो! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो।
(ङ) ना! ना! मैं स्त्री वध कदापि नहीं करूँगा।
(च) क्यों, सिर क्यों झुका लिया सम्राट!

● **क्रियाकलाप आधारित**

2. दक्षिण अफ्रीका में रेल से उतारे जाने की घटना ने महात्मा गांधी के जीवन की दिशा ही बदल दी।

11. विनय की डायरी

अभ्यास

उच्चारण आधारित

● छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

● **मौखिक**

1. घर-घर पर विनय के कारनामे की चर्चा हो रही थी।
2. जगदीश ने छत पर देखा कि विनय के हाथ में पिल्ला है और उसका मुँह सेलोटेप से चिपकाकर बाँधा हुआ है और आगे के दोनों पैर भी बँधे हैं।
3. बच्चों के अभिभावक इस बात को लेकर चिंतित थे कि कहीं वह उनके बच्चों की जान न ले लें।
4. विनय छत पर पिल्ले के मुँह का टेप हटा रहा था।
5. अन्य बच्चों के माता-पिता और प्रधानाचार्य।

● **लिखित**

1. विनय का पीछा करने गये प्रधानाचार्य ने देखा कि विनय ने गड्ढ़ा खोदकर डायरी मिट्टी में दबा दी है।

2. विनय के पिता ने डायरी देते समय कहा था कि चुप रहने से अच्छा है कि अपने मन की बात डायरी में लिखा करो।
3. पिल्ले के मुँह और पैरों पर सेलो टेप अभिनव, विवेक और कियान ने लगाया था।
4. तीनों बच्चों द्वारा गलती की माफी माँगने पर विनय के पिता ने प्रधानाचार्य से कहा – "सर अब इस बात को यहीं खत्म कर दीजिए। इन तीनों बच्चों को माफ कर करिए। बच्चों से गलती हो जाती है। आगे से नहीं करेंगे।"
5. जब प्रधानाचार्य ने डायरी पढ़ी तो उसमें ज्यादातर अच्छी बातें लिखी थीं। इन बातों को पढ़कर प्रधानाचार्य जी का गला भर आया तब विनय की मम्मी फफक-फफक कर रोने लगी।

- **प्रत्यास्मरण**

1. विनय अपने पापा को डायरी इसलिए नहीं देना चाहता था कि इसमें अभिनव, विवेक और कियान फँस जाएँगे और उनके माता-पिता को मेरे माता-पिता की तरह ही शर्मिंदा होना पड़ेगा।
2. डायरी में ज्यादातर अच्छी बातें लिखी थीं।
3. विनय की डायरी में स्कूल का, घर का, अध्यापक और स्कूल के बच्चों का जिक्र था।
4. डायरी पढ़ते समय प्रधानाचार्य जी का गला भर आया क्योंकि उसमें अच्छी बातें और सकारात्मक पहलू के बारे में लिखा गया था।

- **अपनी समझ से**

1. (क) 4. (घ)
2. (ख) 5. (क)
3. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. विनय के पिता को स्कूल जाने में घबराहट यह सोचकर हो रही थी कि पता नहीं विनय ने डायरी में क्या लिखा होगा। उन्हें लगने लगा था कि शायद वे स्वयं भी अपने बेटे को नहीं पहचान पाए। साथ ही उन्हें शर्मिंदा होने का भय सता रहा था।
2. उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह नहीं चाहता था कि अभिनव, विवेक और कियान फँसें और उसके माता-पिता की तरह उन तीनों के माता-पिता को भी शर्मिंदा होना पड़े।
3. विनय की माँ इसलिए फफक-फफक कर रोने लगी होगी क्योंकि उसे लगा होगा कि मेरे बच्चे को निर्दोष होने के बावजूद दोषी ठहराया जा रहा था। उन्हें यह जानकर दु:ख हुआ होगा कि उनका बेटा अंदर-ही-अंदर कष्ट सह रहा था और किसी को उसकी बात पर विश्वास नहीं था।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का आशय है कि माता-पिता बच्चे के स्वभाव को जानते थे। उन्हें विश्वास था कि विनय गलत काम नहीं कर सकता।
2. इस पंक्ति का आशय है कि विनय सच बोल रहा था, लेकिन कोई उसकी बात पर विश्वास नहीं कर रहा था। इस बात से उसके मन का असहायपन छलक रहा है।
3. इस पंक्ति का आशय है कि विनय आशावादी और ईमानदार था। कठिन परिस्थितियों में भी वह अच्छा सोचता था। यह बात उसके सकारात्मक पहलू को दर्शाती है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. डायरी 4. जान
2. जगदीश 5. विनय।
3. पपी

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **किसने, किससे कहा?**

1. विनय के पिता ने प्रधानाचार्य जी से।
2. प्रधानाचार्य ने विनय के पिताजी से।
3. विनय के पिताजी ने प्रधानाचार्य जी से।
4. विनय के पिताजी ने विनय से।
5. दूसरे बच्चों के माता-पिता आपस में।

- **पाठ से आगे**

1. **मन के विचार**

1. मेरे विचार से विनय का कार्य पूरी तरह से अनुचित नहीं था, क्योंकि वह निर्दोष था। उसने किसी को हानि नहीं पहुँचाई, बल्कि अपनी सच्चाई डायरी में लिखी। परन्तु मन

में ही सब बात रखना और चुप रहना भी उचित नहीं था। अपनी बात को बताकर समस्या का समाधान और बेहतर निकाला जा सकता था।

2. एक बार मैंने अपना गृहकार्य पूरा नहीं किया और शिक्षक ने पूरी कक्षा के सामने पूछा। पहले तो मैं चुप रहा, लेकिन बाद में अपनी गलती स्वीकार कर ली और माफी माँगी। उस दिन से शिक्षक के समझाने पर मैंने भविष्य में गलती न दोहराने का संकल्प लिया।
3. हाँ, एक बार मेरे छोटे भाई से गलती से गिलास टूट गया। वह डर गया, इसलिए मैंने पिताजी से कहा कि मुझसे गिलास टूटा है। बाद में जब बात का पता चला तब माँ ने मेरी सराहना की।
4. विनय शिक्षक या माता-पिता से अपनी बात खुलकर बता सकता था। वह इस घटना को उपस्थित बच्चों के सामने भी प्रकट कर सकता था। वह अपने व्यवहार और स्वभाव से भी साबित कर सकता था कि वह ऐसा काम नहीं कर सकता था।

- **भाषा आधारित**

1. (क) इतनी भोली सूरत के पीछे इतना बड़ा शैतान।
   (ख) विनय को माता-पिता के साथ घर भेज दिया गया।
   (ग) विनय के हाथ से पपी छीन लिया।
   (घ) प्रधानाचार्य के सामने भी विनय ने मुँह बन्द रखा।
2. (क) जगदीश से सारी बात सुनकर प्रधानाचार्य दंग रह गये।
   – क्या रह गए – दंग – सकर्मक क्रिया
   (ख) विनय गड्ढ़ा खोदने लगा।
   – क्या खोदने लगा – गड्ढा – सकर्मक क्रिया।
   (ग) विनय डायरी लिखता था।
   – क्या लिखता था – डायरी – सकर्मक क्रिया।
   (घ) वह चुपचाप खड़ा रहा।
   – क्या रहा – उत्तर नहीं – अकर्मक क्रिया।
3. (क) वह उसके मुँह पर लगा सेलोटेप निकाल रहा है।
   (ख) प्रधानाचार्य विनय को डाटेंगे।
   (ग) मेरे माता-पिता को शर्मिंदा होना पड़ा।
   (घ) हर बात के सकारात्मक पहलू को देखेगा और लिखेगा।
   (ङ) यही डायरी अपने बच्चे को दी।
4. **1. रंगे हाथों पकड़ना –** सबूत के साथ पकड़ना।

वाक्य-प्रयोग– पुलिस ने चोर को रंगे हाथों पकड़ा।

2. दंग रह जाना – आश्चर्यचकित रह जाना।

वाक्य-प्रयोग – वैभव सूर्यवंशी की बैटिंग देखकर लोग दंग रह गए।

3. गूँगा बना रहना – मौन रहना।

वाक्य-प्रयोग – रामू से चोरी करने के बारे में पूछा गया तो वह गूँगा बना रहा।

- **पाठ में आए विदेशी शब्द –** सेलोटेप, दास्तान, नतीजा, शैतानी, अफसोस, बिल्डिंग।

- **क्रियाकलाप आधारित**

2. जीवों पर दया करो।
4. (क) बछड़ा/बछिया
   (ख) मेमना
   (ग) बछेड़ा/बछेड़ी
   (घ) शावक
   (ङ) चूजा।

12. जग को पथ दिखलाने वाला

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. ध्रुवतारा
2. धूप और खुली हवा को।
3. जन्मभूमि पर।
4. आसमान पर राह बनाने से आशय है– जीवन को उन्नतिशील बनाना।
5. कवि भारतभूमि पर जन्म लेने को अपना सौभाग्य मानता है।

- **लिखित**

1. भारतीय वैज्ञानिकों ने चन्द्रमा पर अपना परचम फहराया है और अब मंगल ग्रह पर जाने की तैयारी कर रहा है।
2. भारतवासियों का नारा है– "हम न झुकेंगे, हम न रुकेंगे"।
3. ध्रुवतारा, पृथ्वी, चन्द्रमा, मंगल, धूप, हवा, चंदन, आँधी, बिजली, पर्वत, सागर आदि प्रकृति के उपादानों का प्रयोग हुआ है।
4. मातृभूमि के लिए ध्रुवतारे की उपमा कवि ने इसलिए दी है क्योंकि जिस प्रकार से समस्त संसार के नागरिकों को ध्रुवतारा सही मार्ग दिखाता है यानि ध्रुव तारा सदैव उत्तर दिशा में उदित होता है जिससे लोगों को सही दिशा का पता चलता है उसी प्रकार से भारत के विश्वगुरु बनने पर ही सम्पूर्ण विश्व को मार्गदर्शन दिखाया जा सकता है।
5. इस आशय की पंक्तियाँ निम्नवत् हैं–

   पर्वत-पर्वत पाँव बढ़ाता,
   सागर की लहरों पर गाता।
   आसमान में राह बनाता,
   चलता मन बनजारा है।।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ एवं प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'उमंग' के पाठ 'जग को पथ दिखलाने वाला' से लिया गया है। इसके कवि आरसीप्रसाद सिंह हैं। इसमें भारतवासियों के कर्मठपन को दर्शाया गया है। वे निरंतर आगे बढ़ते हुए नवयुग का निर्माण करेंगे।

व्याख्या – कवि कहता है कि चाहे आँधी शोर मचाए या बिजली डराने का प्रयास करे किंतु भारतवासी झुकने और रुकने वाले नहीं हैं। यह हमारा दृढ़ संकल्प है।

आगे कवि कहता है कि हमारा साहस पर्वतों की दुर्गम कठिनाइयों को पार करता है। सागर की लहरों के साथ आगे बढ़ता है और आकाश में अपनी राह बना लेता है।

आगे कवि कहता है कि अब चाँद और मंगल तक पहुँचने का हमारा सपना भी साकार होने जा रहा है। ये पंक्तियाँ भारत की वैज्ञानिक प्रगति की ओर संकेत करती हैं। अमर तिरंगे को ऊँचा लहराकर नए युग ने हम भारतवासियों को आगे बढ़ने के लिए उत्साहित किया है।

- **अपनी समझ से**

1. (ग)
2. (ग)
3. (ख)
4. (क)
5. **(क)**

स **सो**च-समझकर

1. मन को बनजारा इसलिए कहा गया है क्योंकि बनजारों की तरह मन भी कभी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहता है। वह निरंतर नई कल्पनाओं की ओर बढ़ता है।
2. भारतभूमि, विविधता, संस्कृति और परंपराओं से समृद्ध है। यहाँ अनेक रीति-रिवाजों और अनेक भाषाओं के बावजूद भी अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं। यह वीरों, संत-महापुरुषों की भूमि है। भारत प्राकृतिक सौन्दर्य, ज्ञान, अध्यात्म और वैज्ञानिक प्रगति के लिए प▮**सिद्ध है।**

स **पंक्तियों** ij ppkZ

1- bl iafDr dk vFkZ gS fd gekjk lkgl vkSj vkRefo'okl bruk izcy gS fd ge dfBu lsdfBuifjfLFkfr;ksaesaHkhizlUurkvkSj mRlkg cuk, j[krs gSaA

2- bl iafDr ds ekè;e ls dfo xoZ ds lkFk dgrkgSfdgesaHkkjrHkwfeesatUeysus dklkSHkkX;izkIrgqvkgSAgesaviusns'k dh egku laLÑfr vkSj vkn'kks± ij xoZ djuk pkfg, rFkk ns'k ds fodkl esa viuk ;ksxnku nsuk pkfg,A

3- bl iafDr ds ekè;e ls dfo dguk pkgrk gS fd ge Hkkjrh;ksa us fdlh dh nklrk Lohdkj ugha dh] cfYd mlds fo#¼ MVdj lkeuk fd;k gSA gekjs dne dfBukb;ksavkSjvM+puksadslkeus#dus okysughagSaA;giafDrHkkjrh;ksads vkRecy dk ifjp; djkrh gSA

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. ध्रुवतारा
2. आँचल
3. जन्मभूमि
4. आँधी
5. बिजली

- **सुमेलन**

1. (iii), 2. (iv), 3. (v), 4. (ii), 5. (i)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. भारत की सुंदरता अनेक विशेषताओं के कारण अद्वितीय है–

- उत्तर के ऊँचे-ऊँचे हिमालय पर्वत देश की रक्षा करते हैं।
- पवित्र गंगा-यमुना जैसी नदियाँ जीवनदायिनी हैं।
- यहाँ की विविध संस्कृति, वेशभूषा, भाषा और त्योहारों का समागम है।
- यह महान वीरों और सन्तों की जन्मभूमि है।

2. हम देश की प्रगति और विकास में निम्न योगदान दे सकते हैं–
   - ईमानदारी से पढ़ाई कर अच्छे नागरिक बन सकते हैं।
   - स्वच्छता का ध्यान रख सकते हैं।
   - पर्यावरण को संरक्षित कर सकते हैं।
   - दूसरों की सहायता कर सकते हैं।
   - कुछ अच्छे-अच्छे काम करके देश को आगे बढ़ा सकते हैं।

- **भाषा आधारित**

1. (क) सागर – समुद्र, सिंधु
   (ख) पहाड़ – पर्वत, गिरि
   (ग) आसमान – नभ, आकाश
   (घ) बिजली – विद्युत, तड़ित
   (ङ) आँख – नयन, नेत्र
   (च) हवा – वायु, पवन।
2. (क) अमर – मर्त्य
   (ख) खुशबू – बदबू
   (ग) भीगी – सूखी
   (घ) खुली – बंद
   (ङ) जन्म – मृत्यु
   (च) एक – अनेक
3. (क) भारत – भ्+आ+र्+अ+त्+अ
   (ख) सौभाग्य – स्+औ+भ्+आ+ग्+य्+अ
   (ग) दिखलाते – द्+इ+ख्+अ+ल्+आ+त्+ए
   (घ) ललकारा – ल्+अ+ल्+अ+क्+आ+र्+आ
4. (क) आँधी – आँधियाँ
   (ख) लहरें – लहर
   (ग) आँख – आँखें
   (घ) राह – राहें
   (ङ) तारे – तारा
   (च) हवाएँ – हवा

- **क्रियाकलाप आधारित**

4. बनजारा भारत की एक घुमन्तू जाति है। जो मुख्य रूप से राजस्थान के मेवाड़ और मारवाड़ क्षेत्र में उत्पन्न मानी जाती है। ये मुख्य रूप से बैलों के कारवाँ के साथ नमक, अनाज और सामान ढोने वाले प्रमुख व्यापारी थे।

13. एलिस की यात्रा

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. एफिम और एलिश रूस के एक गाँव में रहते थे।
2. एफिम ने बहुत सा धन लिया, जबकि एलिश ने केवल उतना ही धन लिया, जितना आवश्यक था।
3. एफिम दया रहित था जबकि एलिश दयावान था।
4. बीमार बच्चे ने कहा– "बाबा, हम बहुत भूखे हैं, हमें रोटी दो।" बीमार व्यक्ति ने कहा कि हमें भुखमरी ने घेर रखा है। मेरा पुत्र भूख से मर रहा है।
5. एलिश ने सुना कि स्त्री अपने बेटे से कह रही थी– "बेटा! यह मनुष्य नहीं, देवदूत है। ऐसे भले मनुष्य संसार में अधिक नहीं हैं।"

- **लिखित**

1. एफिम और एलिश दोनों घनिष्ठ मित्र थे। दोनों ने साथ-साथ यरूशलम की यात्रा करने का निर्णय लिया।
2. एलिश ने सुबह होते ही घर की साफ-सफाई की, चूल्हा जलाया और भोजन बनाया। उनके लिए एक गाय खरीदी और खेत जोतने के

लिए एक घोड़ा खरीदा। साथ ही फसल आने तक के लिए अनाज खरीदा।

3. एफिम ने गिरिजाघर में दीपकों के प्रकाश के पीछे एक ऐसा दृश्य देखा, जिससे वह आश्चर्यचकित रह गया। वहाँ उसने एलिश की तरह एक पुरुष देखा।
4. एफिम को स्त्री ने एलिश के बारे में बताते हुए कहा– मैं नहीं जानती वह कौन था, मनुष्य अथवा देवदूत। वह हम सबसे प्रेम करता था। वह अपना नाम बताए बिना यहाँ से चला गया। यदि वह नहीं होता, तो हम लोग मर ही गए होते।
5. अपनी यात्रा को लेकर एफिम को इस बात का संदेह था कि उसका शरीर वहाँ पहुँचा, किन्तु उसकी आत्मा वहाँ पहुँच सकी या नहीं। उसे पता चल गया था कि मानव-सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है जिससे वह विमुख होकर यरूशलम की यात्रा पर गया था।

- **प्रत्यास्मरण**

1. ईश्वर की सच्ची सेवा मानव-सेवा है।
2. एफिम ने एलिश को चर्च के भीतरी भाग में दीपमाला के पीछे खड़ा देखा था।
3. एफिम के अनुसार, यरूशलम एलिश की आत्मा पहुँची थी और एफिम का शरीर।
4. एलिश सच्चा तीर्थयात्री और ईश्वर का प्रिय था।

- **अपनी समझ से**

1. (क)
2. (ख)
3. (ग)
4. (ग)
5. (घ)

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का आशय है कि एलिश यरूशलम न जा पाने को ईश्वर की इच्छा मानकर स्व. ीकार कर रहा है। वह परिस्थिति के अनुसार स्वयं पर संतोष प्रकट कर रहा है।
2. "बेटा, यह मनुष्य नहीं, देवदूत है। ऐसे भले मनुष्य संसार में अधिक नहीं हैं।"

   इसका आशय है कि जिस व्यक्ति के बारे में बताया जा रहा है वह बहुत ही नेकदिल और दयालु है। उसके अच्छे व्यवहार और त्याग के कारण उसे देवदूत की संज्ञा दी जा रही है। ऐसे सज्जन लोग संसार में बहुत कम मिलते हैं।
3. इस पंक्ति का आशय है कि व्यक्ति का शरीर तो कहीं पर पहुँच सकता है लेकिन सच्ची आत्मा का पहुँचना उसके कर्मों पर निर्भर करता है। मानव सेवा ही सच्ची सेवा है और इससे विमुख होकर व्यक्ति दिखावे को करके ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता।

- **रिक्त स्थानपूर्ति**

1. यरूशलम, 2. सेवा, 3. चर्च, 4. यात्री, 5. तीर्थयात्री।

- **किसने, किससे कहा?**

1. एलिश ने एफिक से, 2. बालक ने एलिश से, 3. एलिश ने एफिम से, 4. माँ ने बेटे से, 5. एफिम ने एलिश से।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. एफिम झोंपड़ी के बाहर ही बैठा रहा, वह अंदर भी नहीं आया, जबकि एलिश वहीं रुक गया क्योंकि दोनों के विचारों में विरोधाभास था। एफिम को धन का घमण्ड था और वह तीर्थयात्रा को ही महत्त्वपूर्ण मान रहा था। वहीं एलिश एक दयावान और दूसरों के दुख-दर्द को महसूस करने वाला व्यक्ति था। एलिश के लिए मानव सेवा ही सच्ची तीर्थयात्रा थी।
2. मेरे विचार से ऐसा इसलिए हुआ होगा क्योंकि यरूशलम पहुँचना यात्रा का बाहरी रूप है, परंतु सच्ची तीर्थयात्रा का संबंध मन की पवित्रता से है। यही कारण था कि एलिश यरूशलम पहुँचा ही नहीं, फिर भी उसकी आत्मा उसी प्रकार पवित्र हो गई जैसे तीर्थयात्रा करने के पश्चात होती है।

- **भाषा आधारित**

1. (क) बारहवीं
   (ख) एक दर्जन
   (ग) सौ रुपये
   (घ) कई
   (ङ) सभी
2. (क) घनिष्ठ – घ्+अ+न्+इ+ष्+ठ्+अ
   (ख) दयालु – द्+अ+य्+आ+ल्+उ
   (ग) छत्तीस – छ्+अ+त्+त्+ई+स्+अ

(घ) देवदूत – द्+ए+व्+अ+द्+ऊ+त्+अ
(ङ) ऊष्मा – ऊ+ष्+म्+आ
(च) स्वागत – स्+व्+आ+ग्+अ+त्+अ

3. (क) अद्वितीय (ख) निःशुल्क
(ग) दैनिक (घ) अग्रणी
(ङ) भावी

4. (क) पर्याप्त – हमें परीक्षा की तैयारी के लिए पर्याप्त समय मिला।
(ख) तीर्थयात्रा – श्रवणकुमार अपने माता-पिता को तीर्थयात्रा पर ले गए।
(ग) अनुमति – माता-पिता की अनुमति के बगैर बाहर नहीं जाना चाहिए।
(घ) गिरजाघर – रविवार को लोग प्रार्थना करने गिरजाघर जाते हैं।
(ङ) वातावरण – शांत वातावरण पढ़ाई के लिए अच्छा होता है।

- **क्रियाकलाप आधारित**

2. मानव सेवा के विषय में नारे/सूक्तियाँ
   - मानव सेवा ही पूजा है।
   - परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है।
   - दया और करुणा ही मानवता की पहचान हैं।
   - सेवा का मार्ग ही सच्चा मार्ग है।

14. छोटा जादूगर

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. जीविका चलाने के लिए।
2. पहली बार लेखक ने झोंपड़ी में देखा कि एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।
3. छोटे जादूगर के खेल में भालू मना रहा था। बिल्ली रूठ रही थी। बंदर घुड़क रहा था। गुड़िया का ब्याह हो रहा था। गुड्डा वर काना था।
4. शरबत पीकर लड़का व लेखक निशाना लगाने गए।
5. जादूगर की माँ को अस्पताल से पैसे न होने के कारण निकाल दिया गया था।

- **लिखित**

1. कार्निवाल के मैदान में लेखक को एक लड़का (छोटा जादूगर) मिला। उसके गले में फटे कुर्ते के ऊपर एक मोटी सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुख पर गम्भीर विषाद था।
2. छोटे जादूगर को अल्पावस्था में ही जीविका उपार्जन इसलिए करना पड़ा क्योंकि उसके पिताजी जेल में थे और माँ बीमार थी।
3. कलकत्ता में लेखक छोटे जादूगर से कार्निवाल के मैदान में मिला। लेखक छोटे जादूगर को देखकर उसकी ओर आकर्षित हुआ और उसे उस दिन का अपना साथी चुना।
4. लेखक को छोटे जादूगर पर क्रोध इसलिए आया क्योंकि उसकी माँ ने कहा था कि आज तुरंत चले आना, मेरी अंतिम घड़ी समीप है। ऐसी स्थिति में भी वह माँ को छोड़कर खेल दिखाने चला आया था।
5. सड़क के किनारे खेल दिखाते समय छोटा जादूगर उदास इसलिए था क्योंकि उसकी माँ की अंतिम घड़ी समीप थी। उसका ध्यान अपनी माँ पर था और खेल दिखाने में उसका मन नहीं लग रहा था।

- **प्रत्यास्मरण**

1. लेखक द्वारा क्रोध करने पर छोटा जादूगर उससे कुछ अधिक कहने पर अपना अपमान अनुभव कर रहा था।
2. छोटे जादूगर से लेखक ने क्रोध में कहा – "तब भी तुम खेल दिखाने चले आए।"
3. छोटे जादूगर के मुँह पर परिचित तिरस्कार के भाव थे।
4. मनुष्य किसी के सुख-दुख की तुलना अपने माप के अनुसार करता है।

- **अपनी समझ से**

1. (ख)
2. (क)
3. (क)
4. (ग)
5. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. इस रचना से छोटे जादूगर के व्यक्तित्व के बारे में पता चलता है कि वह बड़ा ही सरल, संतोषी और नि:स्वार्थी बालक है। वह पुरुस्कार व दिखावे से अधिक अपने कर्तव्य को महत्त्व देता है।
2. इस पंक्ति के माध्यम से लेखक आतिशबाजी और रोशनी का वर्णन कर रहा है। वह अपने चारों ओर चमचमाती रोशनी और आतिशबाजी को देखकर उतावला हो उठता है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. "उस उज्जवल धूप में सारा संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा।" पंक्ति का अर्थ है कि इस घटना से इतना विचलित और भावुक हो गया कि उसे आसपास की दुनिया अस्थिर और विचित्र सी लगने लगी। जीवन की सच्चाई और करुणा ने उसके मन को झकझोर कर रख दिया।
2. इस पंक्ति का आशय है कि छोटा जादूगर अपने काम को ही अपनी पहचान मानता है। वह संघर्षशील और स्वाभिमानी है। वह जादू दिखाकर अपना जीवन-यापन करता है। उसे अपने काम पर गर्व है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. जेल　　3. बारह
2. कम्बल　　4. माँ-माँ

- **किसने, किससे कहा?**

1. लेखक ने छोटे जादूगर से
2. छोटे जादूगर ने लेखक से
3. लेखक की पत्नी ने छोटे जादूगर से
4. छोटे जादूगर ने लेखक से
5. लेखक ने छोटे जादूगर से

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

1. छोटे जादूगर की बीमार माँ अपने बेटे के बारे में यही सोचती होगी कि वह सकुशल जीवन यापन करे, किसी प्रकार की परेशानी न आए और ईश्वर उसका भला करे।
2. हाँ, मैंने ऐसा ही मार्मिक चरित्र अपने गाँव में देखा है। एक बूढ़ी माँ अपने बीमार बेटे का मजदूरी करके इलाज कराती रही। जबकि उसके बेटे की शादी हो चुकी थी और एक बेटा भी था, किंतु पत्नी उसे छोड़कर चली गई। कुछ समय बाद बेटे का भी निधन हो गया। आज बेचारी और भी वृद्ध हो चुकी है और अब अपने पोते का भरण-पोषण करती है।

- **भाषा आधारित**

1. (क) से ऊपर　　(घ) के अंदर
   (ख) के साथ　　(ङ) के बिना
   (ग) के संग
2. **(क) लोट-पोट होना –** बहुत अधिक खुशी/दर्द होना।

वाक्य प्रयोग – बच्चे जोकर का कमाल देखकर हँसी से लोट-पोट हो गए।

(ख) अंतिम घड़ी समीप आना – मृत्यु नजदीक होना।

वाक्य प्रयोग – बीमार बालक की अंतिम घड़ी समीप थी।

(ग) नौ दो ग्यारह होना – भाग जाना।

वाक्य प्रयोग – गाँव में आया भेड़िया कुत्तों को देखकर नौ दो ग्यारह हो गया।

(घ) आँखें बदलना – गुस्से में देखना।

वाक्य प्रयोग – बालक को बार-बार डाँट पड़ने पर उसकी आँखें बदल गईं।

3. (क) कर्ण – कान
   (ख) दुग्ध – दूध
   (ग) नृत्य – नाच
   (घ) रात्रि – रात
4. मैंने पूछा, "और उस पर्दे में क्या है? तुम वहाँ गए थे?" "नहीं, मैं वहाँ न जा सका। टिकट लगता है।" मैंने कहा, "तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको लिवा चलूँ।" मैंने मन-ही-मन कहा, 'भाई आज के तुम्हीं मित्र रहे।' उसने कहा, "वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए निशाना लगाया जाए।" मैंने उससे सहमत होकर कहा, "तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।" उसने स्वीकारसूचक सिर हिला दिया।

- **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र स्वयं करें।

15. गिल्लू

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. लेखिका को गिल्लू घायल अवस्था में कमरे के बरामदे में मिला था।
2. लेखिका ने गिल्लू को एक डलिया पर रूई बिछाकर रखा।
3. लेखिका को मोटर दुर्घटना द्वारा चोट लगी।
4. लेखिका ने गिल्लू को मुक्त कर दिया।
5. गिल्लू को उष्णता देने के लिए लेखिका ने हीटर जलाया।

- **लिखित**

1. लेखका ने गिल्लू का उपचार करने के लिए रूई से रक्त पोंछकर पेंसिलीन का मरहम लगाया।
2. लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू उसके पैर तक आकर सर्र से पर्दे पर चढ़ जाता और फिर तेजी से उतरता।
3. लेखिका की अस्वस्थता के दौरान गिल्लू सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से उसके सिर और बालों को हौले-हौले से सहलाता रहता।
4. एक दिन गिल्लू न कुछ खाया न बाहर गया। रात में वह झूले से उतरकर लेखिका के हाथ को अपने ठण्डे पंजों से पकड़ा। लेखिका ने उसे उष्णता देने के लिए हीटर जलाया, किन्तु प्रभात की किरण के साथ वह स्वर्ग सिधार गया।
5. गिल्लू लेखिका द्वारा पाले गए पशुओं में अपवाद इसलिए था क्योंकि उसमें गजब की समझदारी और अनोखी आदतें थीं तथा इंसानी लगाव था।

- **प्रत्यास्मरण**

1. गिलहरियों का जीवन लगभग दो वर्ष होता है।
2. गिल्लू अपनी अंतिम रात को झूले से उतरकर लेखिका के बिस्तर पर गया।
3. गिल्लू ने महादवी वर्मा की उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जैसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।
4. गिल्लू को उष्णता देने के लिए लेखिका ने हीटर जलाकर उसे गर्म करने का प्रयत्न किया।

- **अपनी समझ से**

1. (ख)
2. (क)
3. (ख)
4. (ग)
5. (क)

- **सोच-समझकर**

1. लेखिका के दुर्घटनाग्रस्त होने पर गिल्लू ने खाना-पीना इसलिए बंद कर दिया होगा क्योंकि वह लेखिका को न पाकर किसी घटना का अनुमान लगा रहा होगा और उसे बैचेनी हो रही होगी क्योंकि गिल्लू लेखिका से बेहद लगाव रखता था।
2. लेखिका ने गिल्लू को घायल अवस्था में अपनाकर उसका उपचार किया, उसे आश्रय दिया। वह उसे अत्यन्त स्नेह करती थी। जब लेखिका दुर्घटनाग्रस्त हुई तब गिल्लू ने लगभग खाना-पीना छोड़ दिया और चुपचाप बैठा रहा। इससे स्पष्ट होता है कि लेखिका गिल्लू से आत्मीय भाव रखती थी तो गिल्लू भी लेखिका से लगाव रखता था।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. जब गिल्लू बाहर पेड़ों और खुले वातावरण में गया तब उसने स्वतंत्रता का अहसास किया। वह पिंजरे से बाहर आकर स्वच्छंद जीवन जी सका और राहत की साँस ली।
2. जब गिल्लू लेखिका के पास से हट जाता था तब उसे खालीपन का अहसास होता था, मानो उसका ख्याल रखने वाला कोई अपना उससे दूर हो गया हो।
3. इस पंक्ति में गिल्लू की मृत्यु का संकेत है। जब सुबह सूर्य का उदय हुआ तो उसी समय गिल्लू ने संसार से विदा ले लिया। लेखिका के शब्दों के अनुसार, मृत्यु को किसी और जीवन में जागना रह गया है। जिसका अर्थ है कि मृत्यु अंत नहीं, बल्कि एक नए जीवन की शुरुआत है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. पेंसिलिन
2. राहत
3. काजू
4. सुराही
5. दो।

- **सुमेलन**

1. (ख), 2. (क), 3. (ङ), 4. (ग), 5. (घ)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. एक बार मेरे घर के पास एक घायल कबूतर गिर पड़ा। मैंने उसे उठाकर सुरक्षित स्थान पर रखा, पानी पिलाया और दवा लगाई। कुछ दिनों बाद वह स्वस्थ हो गया और उड़ गया। वह रोज मेरे आँगन में आ जाता और मेरे पास बैठ जाता। प्रेम और स्नेह से पशु-पक्षी भी अपने बन जाते हैं।
2. 'प्रेम और स्नेह से सभी को अपना बनाया जा सकता है।' समर्थन में तर्क–
   - प्रेम से मन का भय और दूरी समाप्त हो जाती है।
   - स्नेह मिलने पर मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी भी विश्वास करने लगते हैं।
   - अपनापन संबंधों को मजबूत करता है।
   - प्रेम से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।
3. यदि लेखिका गिल्लू को घायल अवस्था में छोड़ देती तो शायद उसकी जीवन लीला वहीं समाप्त हो जाती। वह प्रेम और ममता से वंचित रह जाता और 'गिल्लू' जैसी मार्मिक कहानी का जन्म न होता।

- **भाषा आधारित**

1. (क) प्रकाश + इत = प्रकाशित
   (ख) विस्मय + इत = विस्मित
   (ग) आकर्षण + इत = आकर्षित
   (घ) सम्मान + इत = सम्मानित
   (ङ) फल + इत = फलित
   (च) सुगंध + इत = सुगंधित
2. (क) बालक, (ख) भोजन, (ग) छोटा, (घ) नयन, (ङ) गृह, (च) पास।
3. (क) पंडिताइन, (ख) चूहा, (ग) शेरनी, (घ) लेखक, (ङ) कवयित्री, (च) देवता, (छ) लोहारिन, (ज) पति, (झ) सुनारिन।
4. (क) निश्चेष्ट सा, मनकों सी, तीन-चार, चंचल-चमकीली, नन्हें से, जैस-तैसे, हौले-हौले आदि।
5. (क) हिलाकर, झूलता।
   (ख) आकर, चढ़ जाता।
   (ग) सहलाता था।
   (घ) चलाया।

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. यदि मुझे घायल चिड़िया दिखाई दी तो–
   - मैं उसे सुरक्षित स्थान पर ले जाऊँगा।
   - पानी और हल्का आहार दूँगा।
   - उसे पूरी तरह स्वस्थ होने तक उसकी देखभाल करूँगा।

   (नोट– छात्र अपने विचार लिखें)

16. जीवन नहीं मरा करता है

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. नयन सेज पर सोने वाला आँख का पानी।
2. 'जिल्द बदलती पोथी' का आशय है कि जिस प्रकार पुस्तक की जिल्द को बदलकर उसमें दूसरी जिल्द चढ़ा दी जाती है उसी प्रकार आत्मा पुन: नया जीवन धारण करती है।
3. कवि ने 'धूप की धोती' आत्मा के नवीन जीवन धारण करने को कहा है।
4. तम यहाँ जीवन में आने वाले कष्टों के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।
5. दर्पण नहीं मरा करता है से कवि का तात्पर्य है किसी व्यक्ति या वस्तु के चले जाने से जीवन की वास्तविक सत्यता समाप्त नहीं होती।

- **लिखित**

1. कवि कहता है कि कुछ इच्छाएँ पूरी न होने से जीवन समाप्त नहीं होता। अत: मनुष्य को निराश नहीं होना चाहिए। उसे नई उम्मीदों के साथ आगे बढ़ना चाहिए।
2. कुछ घड़ों के टूट जाने से पनघट का महत्त्व नहीं होता क्योंकि पनघट स्थायी और अटल है।
3. कश्तियों के डूबने का तट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि वह स्थिर और दृढ़ रहता है।
4. पतझड़ में पत्ते झड़ जाते हैं परंतु उपवन ज्यों का त्यों बना रहता है। कुछ समय पश्चात पुन: वंसत आता है और हरियाली छा जाती है।
5. डूबे बिना नहाने वालों से कवि का तात्पर्य उन लोगों से है जो बिना परिश्रम और कष्ट उठाये सफलता पाना चाहते हैं।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ और प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'उमंग' की 'जीवन नहीं मरा करता है' कविता से उद्धृत हैं। इसके रचयिता श्री गोपालदास 'नीरज' जी हैं।

इन पंक्तियों में कवि ने सकारात्मकता, आशा, और साहस का संदेश दिया है।

व्याख्या– कवि कहता है यदि माली उपवन को नष्ट भी कर दे तो सुगंध समाप्त नहीं होती। उसी प्रकार तूफान के आने पर खिड़की बन्द नहीं हो जाती, अर्थात् विपरीत परिस्थितियों के आने पर आशा, सत्य और सकारात्मकता का मार्ग बंद नहीं होता। कुछ लोगों की नफरत और आलोचना से सच्चाई और अच्छाई समाप्त नहीं हो जाती। कुछ व्यक्तियों के रूठ जाने पर या चले जाने पर जीवन की वास्तविकता समाप्त नहीं होती। इसलिए मनुष्य को निराश नहीं होना चाहिए।

- **अपनी समझ से**

1. (क)
2. (घ)
3. (ग)
4. (ख)
5. (क)

- **सोच-समझकर**

1. बचपन पर खिलौनों के खोने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि बचपन स्थायी और अटल है। उसे खिलौने अपने मोह के जाल में नहीं बाँध सकते।
2. जल्द बदलती पोथी का अर्थ है कि पुस्तक का बाहरी आवरण बदल जाता है, पर अंदर ज्ञान वही रहता है। इसी प्रकार मनुष्य का शरीर नष्ट हो जाता है किन्तु आत्मा अमर

रहती है अर्थात् मृत्यु केवल शरीर का परिवर्तन है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **आशय** – थोड़ा पानी के बह जाने पर वर्षा ऋतु समाप्त नहीं हो जाती अर्थात् कुछ हानि या असफलता से जीवन समाप्त नहीं होता। इसलिए जीवन के संघर्ष से विचलित नहीं होना चाहिए।
2. **आशय** – कुछ दीपों के बुझ जाने से आँगन का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता। इसी प्रकार जीवन में कुछ परेशानियों के आ जाने पर जीवन का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता। अत: पुन: आशावान बनकर आगे बढ़ना चाहिए।
3. **आशय** – पतझड़ के आने पर पेड़ों के पत्ते समाप्त हो जाते हैं, किन्तु बगीचा तो नष्ट नहीं होता। कुछ समय बाद वसंत हरियाली लेकर पुन: आता है। इसी प्रकार कठिन समय स्थायी नहीं रहता, पुन: नई आशा के साथ व्यक्ति को आगे बढ़ना चाहिए।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. कश्तियाँ, तट, 4. बिखर, समस्या,
2. बढ़ाने, लौ, 5. खोता, जिल्द।
3. माली, गंध,

- **सुमेलन**

1. (ii), 2. (iv), 3. (v), 4. (ii), 5. (i)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि किसी व्यक्ति को असफलता मिल जाए तो जीवन समाप्त नहीं हो जाता। वह पुन: प्रयास कर सकता है। जैसे पतझड़ के आने के बाद पुन: उपवन में बहार आ जाती है, वैसे ही जीवन में नए अवसर आते रहते हैं।
2. यदि हम केवल अतीत के दुखों में डूबे रहेंगे तो हमारे वर्तमान और भविष्य दोनों प्रभावित होंगे। मन में निराशा बढ़ेगी और हम आगे बढ़ने का साहस खो बैठेंगे।

- **भाषा आधारित**

1. (क) उपवन – बगीचा, वाटिका
(ख) तट – किनारा, तीर
(ग) तम – अंधकार, अंधेरा
(घ) दिवस – दिन, दिवा
(ङ) पानी – जल, नीर
(च) आँख – नेत्र, नयन

2. **संयुक्ताक्षर**
(क) समस्या – स्य
(ख) ज्यों – ज्य
(ग) तपस्या – स्य
(घ) जिल्द – ल्द
(ङ) कश्तियाँ – श्त
द्वित्व व्यंजन
कच्ची – च्च

3. (क) जीवन मरा नहीं करता है।
(ख) नयन सेज पर सोने वाला आँख का पानी नहीं है।
(ग) माली ने उपवन नहीं लूटा है।
(घ) दर्पण नहीं टूटा है।
(ङ) माला नहीं बिखरी है।

4. (क) माली, (घ) अनंत,
(ख) दिवास्वप्न, (ङ) कुम्हार।
(ग) जलचर,

- **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र स्वयं करें।

17. जरूरत बनी मुसीबत

अभ्यास

उच्चk*ण आधारित

स छात्र **स्वयं करें।**

***ठ आधारि**त

स मौखिक

1. लेखक के अनुसार प्लास्टिक की जरूरत अब मुसीबत बन गई है।
2. बारिश में पॉलिथीन से अटी पड़ी नालियों के कारण हुई थी।
3. प्लास्टिक के प्रति लोगों, संस्थाओं और व्यवस्थाओं का गुस्सा फूट रहा है।
4. प्लास्टिक का दूसरा पक्ष पर्यावरण के लिए खतरनाक है। इसके निर्माण में प्रयोग होने वाले कई खतरनाक रसायन सम्पूर्ण जीव-जगत के लिए बेहद खतरनाक हैं।
5. थैलेट्स नामक एक जहरीले रसायन का उपयोग प्लास्टिक के खिलौने को नरम बनाने के लिए किया जाता है।

● **लिखित**

1. प्लास्टिक हमारे लिए बहुपयोगी और बहु-उद्देशीय ऐसे है, क्योंकि यह सस्ता, हल्का, मजबूत, टिकाऊ, लोचदार और हर तरह के सामान ले जाने में आरामदायक है।
2. प्लास्टिक पर्यावरण के लिए बेहद हानिकारक है क्योंकि इसमें प्रयोग होने वाले जहरीले रसायन संपूर्ण जीव-जगत के लिए बेहद हानिकारक हैं।
3. थैलेट्स नामक रसायन असमय जन्म, समय पूर्व प्रौढ़ता, दाँत संबंधी बीमारी या फिर मस्तिष्क पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।
4. फोटोडिग्रेडेबल सूर्य की रोशनी में गलने वाले (बायोडिग्रेडेबल) जैविक रूप से सड़ने वाले और रासायनिक रूप से गलाकर दोबारा प्रयोग में लाये जाने वाले पॉलिथीन के सफल प्रयोग किये जा चुके हैं।
5. अलेगजेंडर पार्वस ने 1862 में लंदन में एक प्रदर्शनी में पहली बार मानव निर्मित प्लास्टिक का प्रदर्शन किया था।

● **प्रत्यास्मरण**

1. प्लास्टिक खून एच. आई. वी. संक्रमण से मुक्त खून होता है।
2. चिकित्सा के क्षेत्र में प्लास्टिक का सबसे नया और अविश्वसनीय योगदान है– प्लास्टिक खून का निर्माण।
3. प्लास्टिक खून प्लास्टिक के अणुओं से बनता है, जिसमें लौह अणु हैं, जो कि लाल रक्त कोशिकाओं की तरह शरीर में ऑक्सीजन ले जाने का काम करेगा। साथ ही यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में हल्का है और ज्यादा टिकाऊ है। इसे ठण्डे स्थान पर रखने की जरूरत भी नहीं है।
4. प्लास्टिक खून का निर्माण प्लास्टिक अणुओं से होता है।

● **अपनी समझ से**

1. (घ)
2. (क)
3. (ग)
4. (ग)
5. (ख)

● **सोच-समझकर**

1. वर्तमान समय में प्लास्टिक हमारे लिए बेहद उपयोगी सिद्ध हो रहा है किन्तु इसका दूसरा पक्ष पर्यावरण के लिए खतरनाक साबित हो रहा है। यदि हम अपने स्वार्थपूर्ण रवैये को अपनाते रहे तो अपने भविष्य को भयावहता की ओर धकेल रहे हैं।

2. प्लास्टिक चिकित्सा, पैकेजिंग, परिवहन, निर्माण कार्य, कृषि, इलेक्ट्रॉनिक तथा घरेलू सामान के निर्माण में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रही है। यह हल्की, टिकाऊ और सस्ती होने के कारण व्यापक रूप से प्रयोग की जाती है।
3. प्लास्टिक के प्रयोग को कम करने के लिए बांग्लादेश ने सबसे पहले प्लास्टिक बैग पर प्रतिबन्ध लगाया था। डब्लिन ने भी 95 फीसदी प्लास्टिक बैग पर प्रतिबंध लगाया है। वहीं अमेरिका ने भी प्लास्टिक खिलौनों पर प्रतिबंध लगाया है। इस प्रकार लगातार इसके प्रयोग को कम करने में प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. आशय – इस पंक्ति का आशय है कि प्लास्टिक उपयोगी और सुविधाजनक है, परन्तु इसका उपयोग पर्यावरण के लिए बेहद हानिकारक है।

2. आशय – पॉलिथीन नालियों और जल निकास मार्गों को अवरुद्ध कर देती है जिससे पानी भर जाता है और बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

3. आशय – खेती-बाड़ी के क्षेत्र में भी प्लास्टिक का उपयोग किया जा रहा है; जैसे– पाइप लाइनों, प्लास्टिक सीटों आदि के रूप में।

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. नकली बाढ़ 4. खून, अणुओं
2. बांग्लादेश 5. एच. आई. वी.
3. परिवहन, प्लास्टिक

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. मैं प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय करूँगा–
   - मैं कपड़े और जूट के थैलों का उपयोग करूँगा।
   - मैं केवल प्लास्टिक पर निर्भर नहीं रहूँगा, बल्कि बचने का प्रयास करूँगा।
   - प्लास्टिक की वस्तुओं का पुनःचक्रण करूँगा।
   - लोगों को जागरूक करूँगा।

2. प्लास्टिक विहीन दुनिया होने पर कठिनाइयाँ और लाभ–

कठिनाइयाँ–
- सस्ती पैकिंग वाली सामग्री का अभाव
- चिकित्सा और तकनीकी उपकरणों में कठिनाई।
- वस्तुओं का वजन बढ़ सकता है।

लाभ –
- पर्यावरण प्रदूषण में कमी।
- नालियों के अवरोधों की समस्या समाप्त।
- पशुओं और जलीय जीवों की सुरक्षा।
- भूमि की उर्वरता में सुधार।

- **भाषा आधारित**

1.
(क) महँगा (घ) असली
(ख) विपक्ष (ङ) ज्यादा
(ग) मृत्यु (च) गर्म

2.

	शब्द		उपसर्ग		प्रत्यय
(क)	बहुपयोगी	–	बहु	+	उपयोगी
(ख)	बेहद	–	बे	+	हद
(ग)	प्रतिबंध	–	प्रति	+	बंध
(घ)	सुविधा	–	सु	+	विधा
(ङ)	दुर्घटना	–	दुर्	+	घटना
(च)	प्रसाधन	–	प्र	+	साधन

3.

	शब्द	मूलशब्द		प्रत्यय
(क)	लोचदार	लोच	+	दार
(ख)	तापरोधी	ताप	+	रोधी
(ग)	खतरनाक	खतरा	+	नाक
(घ)	जहरीला	जहर	+	ईला

(ङ) निर्भरता निर्भर + ता

4. (क) तबाही – भारी विनाश
वाक्य प्रयोग– बाढ़ ने गाँव में भारी तबाही मचा दी।
(ख) प्रतिबंध – रोक
वाक्य प्रयोग – सरकार ने प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया है।
(ग) लागत – खर्च
वाक्य प्रयोग – पर्यावरण की हानि उसकी लागत से कहीं अधिक है।
(घ) परचम – झण्डा
वाक्य प्रयोग – भारत ने अपनी जीत का परचम स्टेडियम में लहराया।
(ङ) सहज – सरल
वाक्य प्रयोग – मानव का प्रकृति से प्रेम करना उसकी सहज भावना है।

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. प्लास्टिक की रोकथाम से संबंधित नारे –
   - प्लास्टिक हटाओ, प्रकृति बचाओ।
   - कपड़े का थैला अपनाओ, पर्यावरण स्वच्छ बनाओ।
2. **समाचार पत्र हेतु लेख**
   शीर्षक– पर्यावरण के लिए हानिकारक प्लास्टिक
   प्लास्टिक आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है, किन्तु यह पर्यावरण को हानि पहुँचाती है। यह आसानी से नष्ट नहीं होती तथा भूमि, जल और वायु को प्रदूषित करती है। इससे बाढ़ जैसी समस्याएँ पैदा होती हैं। पशु–पक्षियों की मृत्यु का कारण बनती हैं। अतः इमें इसका सीमित उपयोग करना चाहिए और पर्यावरण अनुकूल विकल्प अपनाना चाहिए।

जाँच प्रश्नपत्र-1

1. (क) कवि अतीत से उतना ही लेने की बात कर रहा है जितना उसके लिए पर्याप्त है।
(ख) अंकित दस्ताने उतारकर बर्फ के गोले बना-बनाकर मम्मी-पापा पर बरसाने लगा। कुछ देर बाद मम्मी-पापा भी शामिल होकर एक-दूसरे पर बर्फ के गोले दागने लगे। इस प्रकार उन्होंने बर्फबारी का आनंद लिया।
(ग) फूल देवताओं के शीश पर शोभा देता है।
(घ) इस कथन का आशय यह है कि व्यक्ति के जीवन में अवसर बार-बार नहीं आता और जो इसकी पहचान कर इसका लाभ उठा लेता है वही सफल हो जाता है।
(ङ) मनुष्य प्रकृति के साथ अनेक दुष्कर्म कर रहा है। वह पेड़-पौधों को काटता जा रहा है तथा रासायनिक पदार्थों को बढ़ावा दे रहा है। वायु को धुएँ से प्रदूषित करता जा रहा है। प्रकृति से अधिक पाने की लालसा में वह भूल गया है कि पर्यावरण का संकट गहराता जा रहा है।

2. 1. लेखक के अनुरूप जीवन तब नश्वर हो जाएगा, जब लोगों का लोगों से विश्वास उठ जाएगा। वह केवल उन्हीं बातों का हिसाब लेकर चलेंगे जिन पर धोखा मिला है।
   2. ऐसी घटनाएँ भी कम नहीं हैं, जब लोगों ने अकारण ही दूसरों की सहायता की हो, निराश मन को ढाँढ़स दिया हो और हिम्मत बँधाई हो।

3. रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रार्थना की है कि यदि मुझे संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े, तब भी प्रभु मुझे ऐसी शक्ति देना कि मैं तुममें संदेह न करूँ।
4. लेखक के अनुसार ऐसी घटनाएँ कम नहीं हैं, जब लोगों ने दूसरों की मदद न की हो।

3. 1. (✓), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✗)
4. (क) (iii), (ख) (iv), (ग) (iii), (घ) (ii)।
5. (क) (iii), (ख) (iv), (ग) (v), (घ) (ii), (ङ) (i)।
6. समता – विषमता, कुरूप – रूपवान, नूतन – पुरातन, आकर्षण – प्रतिकर्षण, सुगंध – दुर्गन्ध, बड़प्पन – ओछापन, कर्कश – मधुर, सफल – विफल।
7. (क) यहाँ का तापमान शून्य से नीचे था।
(ख) पिताजी शतरंज में मस्त हैं।
(ग) मोहन बाजार जाएगा।
(घ) हम आज मनाली घूमने जा रहे हैं।
8. (क) टिकटबाबू, (ख) धर्मभीरू, (ग) नभचर, (घ) साप्ताहिक।
9. (क) घी के दिए जलाना – खुशियाँ मनाना।
वाक्य प्रयोग – अयोध्यावासियों ने भगवान राम के अयोध्या लौटने पर घी के दिए जलाए।
(ख) भौचक्का होना – आश्चर्यचकित रह जाना।
वाक्य प्रयोग – वैभव का नब्बे मीटर लम्बा छक्का देखकर लोग भौचक्के रह गए।
(ग) आँखें फटी की फटी रह जाना – हैरान रह जाना।
वाक्य प्रयोग – धोबी के दरवाजे बाघ को बँधा देखकर सबकी आँखें फटी की फटी रह गयीं।
10. जातिवाचक संज्ञा – भाषा, धर्म, वेश, दृष्टि।
भाववाचक संज्ञा – द्वेष, मोह, मौलिकता।

जाँच प्रश्नपत्र-2

1. (क) रजत को फर्श पर पोंछा लगाते देखकर चेतन को आश्चर्य हुआ।
(ख) बालक ने ऐसा इसलिए सोचा क्योंकि उसे अस्पताल का माहौल और वहाँ मरीजों के ठाठ यानी देखरेख उसे पसंद आयी थी।
(ग) सारे संसार को रास्ता दिखाने वाला ध्रुवतारा है।
(घ) गिल्लू लेखिका द्वारा पाले गए पशु-पक्षियों में अपवाद इसलिए था क्योंकि उसमें गजब की समझदारी और अनोखी आदतें थीं तथा इंसानी लगाव था।
(ङ) प्लास्टिक पर्यावरण के लिए बेहद हानिकारक है क्योंकि इसमें प्रयोग होने वाले जहरीले रसायन सम्पूर्ण जीव-जगत के लिए बेहद हानिकारक हैं।
2. **संदर्भ और प्रसंग–** प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'उमंग' की 'जीवन नहीं मरा करता है' कविता से उद्धृत हैं। इसके रचयिता श्री गोपालदास 'नीरज' जी हैं।
इन पंक्तियों में कवि ने आशा, साहस और सकारात्मकता का संदेश दिया है।
व्याख्या– कवि कहता है यदि माली उपवन को नष्ट भी कर दे तो सुगंध समाप्त नहीं होती। उसी प्रकार तूफान के आने पर खिड़की बन्द नहीं हो जाती, अर्थात् विपरीत परिस्थितियों के आने पर आशा, सत्य और सकारात्मकता का मार्ग बंद नहीं होता। कुछ

लोगों की नफरत और आलोचना से सच्चाई और अच्छाई समाप्त नहीं हो जाती। कुछ व्यक्तियों के रूठ जाने पर या चले जाने पर जीवन की वास्तविकता समाप्त नहीं होती। इसलिए मनुष्य को निराश नहीं होना चाहिए।

3. 1. भरण-पोषण, 2. पिल्ला, 3. आँचल, 4. माली, गंध।
4. (क) (iii), (ख) (ii), (ग) (ii)।
5. (क) माँ ने चेतन से, (ख) नाना जी ने नानी जी से, (ग) पिताजी ने विनय से, (घ) एफिम ने एलिश से।
6.

मूल शब्द	प्रत्यय
लोच	दार
ताप	रोधी
साहस	इक
खतरा	नाक
निर्भर	ता
नम्र	ता

7. संयुक्ताक्षर – समस्या (स्य), ज्यों (ज्य), तपस्या (स्य), जिल्द (ल्द), कश्तियाँ (श्त)

   द्वित्व व्यंजन – डब्बा (ब्ब), कच्ची (च्च), लल्लू (ल्ल)।
8. चुहिया–चूहा, लोहार–लोहारिन, सम्राट–साम्राज्ञी, कवि–कवयित्री, लेखिका–लेखक, सुनार–सुनारिन, वीर–वीरांगना, उपासिका–उपासक।
9. (क) के साथ, (ख) के अंदर, (ग) के बिना, (घ) के ऊपर।
10. (क) तीर्थयात्रा – अमरनाथ जी अमरनाथ की तीर्थयात्रा पर गए हैं।

    (ख) वातावरण – गर्मियों में वातावरण उमस भरा होता है।

    (ग) मानव-सेवा – ईश्वर सेवा मानव सेवा ही है।

    (घ) सदावर्त – काशी में कई घाटों पर पुराने समय से ही साधु-संतों के लिए सदावर्त चल रहा है।